

मा॥ ॐ ॥ गुरुयि नमि मनः सहज आनंदि मा २
गिरुवन सचना च वनक मूचि ॥ ॐ ॥

आम नरु ॥
437
REYES

685

नमोऽस्तुते नालनाममाध ॥ दिव्यप्रेषी हनुप्राच.
 नाकाठाम्बुतिदवीः हि रुद्रकमुखनकवर्धन
 श्रीं भू नमामिष्ठीविद्याधनी त्रिरुवनव्हीष्मनीः
 आद्रि सिद्धिवनदवी कृतनी ॥ दहितकनकादिनी वा
 मकं नाटकं २ सूर्यमं उतमायुऽदियान हवनं ॥ न

गनमकुटकंठादिर्गावताः हाजारं नम विरुचितसुख
 हा ॥ दाहिममुख्यत्रवि नरुप्रकाशिताः २ हनयिहा
 सवङ्गगुन्प्रसादा ॥ भू ॥ नामकनदि ॥ नुकताल
 शक्तिप्रेषी कितनाडु नाहितमकुटं ननुषकादि
 वर्धः सूर्यमं कलपन ॥ भू ॥ नोमिष्ठीवङ्गागिनि न

वचनसकडं२ चानूमतिदवी नचिनिती॥ नवि
 ठाणि कृतगुक गिनयनलमर२ नत्तप्रहलित कूड
 लक॥ क॥ कुलिठाक गोटक धात्रितद्विहृ२ वि
 धिहृत्रिठाकन सुत्रपति सवित॥ क॥ वेदवाधनैधु
 मीलितवर्ष२ एनतिविष्यहर्ष या गितिगीत॥ क॥

नागकनदि॥ गालनृक॥ जननिविष्यव्यत्रि कि
 टिवनचदन२ जीवनपूत्रित श्रीमूतवर्ष॥ क॥ जय
 जयदवी श्रीनीलवानाहि॥ चतस्रसगाई नोमितवा
 है॥ उईपिंगलकणि गिनयनलमर२ देष्टा इत
 वसुध धनघात्रनाव॥ क॥ नैकूठाहसु महिषवा

रुतनिविष्य १०२
 नीलवानाहि

हृदयपीठस १०८
काष्ठादिनी

हृदय १ नमः मूर्तमाल. माला ही वश नूप ॥ कु ॥ सतगुन च
नक्ष. मस्तक धनक्षी २ एतति विठ्ठल नंदवाना हिगी
ती ॥ कु ॥ ॥ नागनामकति ॥ तालमाथ ॥ ॥ हयपीठस
न. मीठितदहा. महात्रुत सहठा सुवधू २ नृकवद
न. प्रिनयन ॥ ॥ रित. सिंहलछोपम ॥ ॥ वासिनि ॥ कु ॥

नमामि २ श्रीकाष्ठासामितिदवीसकलजागिनि धति. त्रि
दलावधना ॥ ॥ दानवत्रद्वय. मोलितविलासिनि २ त्रि
रुवनमाकुमर्ति. प्रदायनि ॥ ॥ दहिननुद्रमकधनित.
तीकूवा १ २ त्रिरुवनकलिवन. विनाशन ॥ ॥ वाम
द्रव्यनुद्रमधनितनल्लया १ २ सकलसत्त्वसुखप्रदा

मदनि १५
वज्रसूत्र

यनि ॥ नल्लवचित् पुहलितमकुटा २ निठमचनिगश
मध्व निवाहिनि ॥ ॥ गिल्लजलना ॥ अरिमनहल च
गुर्धगुधहान प्रदायनि ॥ ॥ गमर्वतिहानवक्र गुहपयि
ठात्रक्ष हाननिधिचत्रक्ष गितनमिता ॥ ५ ॥ ॥
नागनामकनि ॥ तालमाध ॥ ॥ मदनि ॥ जल ॥ अग्निवा

युर्मजलउपसंस्थित ॥ श्रीसुमन् २ नानानल्लमय ॥ क
लित ॥ उक्त ॥ नंजसंस्थित ॥ श्रीसुमन् ॥ ५ ॥ नमामि २
॥ श्रीगुन्वक्रसत्य ॥ नगगुधनिधि ॥ सागना २ ॥ ॥ वि
ठवनाथ ॥ विठव ॥ व्यापितगुन् ॥ प्रिरवनसं ॥ पूजिता
॥ ५ ॥ आकाशवर्धमुख ॥ नयनसुविठमल ॥ वक्रघी ०

धनिता १ तिलकः सुवर्णः सुखमहाकनः नल्लमकुट
 तिप्रधना ॥ कु ॥ नल्लकुंडलः सुचिठ्ठीचीवनाः सत्व
 पश्यंकः संस्थिता २ चतुत्रदोषादिः गरुनल्लादिः नल्ल
 मीठलः संपूर्णः ॥ कु ॥ रुदिप्रमादितः गभवतिविला
 सबहुः गुननित्रैरुतः तिप्रधना १ ॥ ॥ अद्विसिद्धि

वत्रप्रदाताः सर्वहुजिनः हानरुवः प्रदाता ॥ कु ॥ ॥
 नागकहु ॥ तालजट्कीकाल ॥ ॥ कानिपुपपंचजि
 नः बीजाकुत्रमधगतं १ कौकात्रमन्वकुनः बीजसंज्ञा
 तं ॥ कु ॥ एजामिठ्ठीमदमापपागोलाकव्वनै १ ॥ ॥
 तिप्रसिठ्ठीभूमिताहताभगतधनिर्ष १ ॥ सुवर्णम

भक्तुः सुप्रधमत्रिः २ उक्तुः नमो हठयनीः वृषवाहनाः २ चंद्र
धवलसुतः प्रिठूलहस्ताः ॥ ध्रु ॥ रीरुः सुप्रधमत्रिः
नीलवर्धः सहिताः २ नृपुः रीरुः नवगधपतिसहिताः ॥ ॥ भ्र
दसिद्धिः नृपुः नृपुः मां कुप्रदाताः २ सुमनः न पापविना
ठाकात्रिः ॥ पठिचमः ०० दायधीः हस्तिवाहनाः २ कृकूम

वर्धः वरुहस्ताः ॥ ॥ दक्षिणवानाहिः घनघातनपाः २ भ्र
कुठाहस्ताः सहितासनाः ॥ ॥ ०० ॥ ठमनः चंडीदवीः धूम
वदनाः २ सिंहवाहनाः खड्गहस्ताः ॥ ॥ भ्रगुकोमानीः
मयूनवाहनाः २ नकुलाकावर्धः ठाकिहस्ताः ॥ ॥ ने
आपुवे सुवीगत्रुतवाहनाः २ ठममवदनाः चक्रहस्ताः २

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ वायुवचामृजार्ककात्रनूपा २ कर्त्तिर्मूढवताल
मानूढवना ॥ ॥ अष्टकुलनागभ. मघादिकंकुप्रपाल
सहितदवी २ प्रथमा मिदवी तवपादान्चत्र ॥ मृगुति
सृगुतिमठाकात्रदवी ॥ कु ॥ ॥ नागकंकु ॥ ॥ तालव
टंककाल ॥ ॥ अर्चिष्यवकनूप. गुरु (ॐ) हिता २

नाना नमितास्कन. प्रकाशितकाता ॥ कु ॥ नमामि २
॥ चन्द्रसूर्य २ ॥ त्वमेवम्रीग. नदठ्यते २ गुरु
तेन. वाच्यते ॥ कु ॥ नागोष्ठीचंद्र. सग हाताना २ स
मसहिता. त्रिहवनव्यापिता ॥ कु ॥ दिनशीसूर्य.
सग हाग्रह २ समसहिता. त्रिहवनहास्कन ॥ कु ॥

विश्वदत्त ११४
शार्ङ्गना

श्रीसुमनः पुदकिमीकुसुम २ विमलाहवनः कनक
मय ॥ कु ॥ उगतसत्यजातिः जम्बूकाष्टानिता २ कु
मज्जन्मः व्याधिरुनक्ष ॥ कु ॥ सत्गुरुचनक्षः शिने
धनिया २ रुनतिविलासः वज्रगीता ॥ कु ॥ ॐ ॥
नागललित ॥ तालरप ॥ ॥ विश्वदत्त पञ्चापनि

शकानरुः चन्द्र २ मीः उल्लस ॥ श्रीकानसंरुवा ॥ कु
नमाभि २ दधीः श्रीः शार्ङ्गनात्रिती २ आः पदाः हात्रि
शीः विरुवदायिनी ॥ ॥ अमितः नृचिडिनः जयम
पुदक्षनिती २ हितजाः मकमूखाः हिमीशुधवलीः
॥ ॥ सव्यरुः वनप्रदीः वामजुः ॐ न्दीवनी २

सुखीले. कामधनी. उ. तुंगरानी. ॥ दाहि. (स. श्रुत).
 क. कामा. दधी २ वीन उ. क. उ. कामा. सुन. स.
 मृती. ॥ गीतपूज्यमाला. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल.
 वि २ ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल.

गीतपूज्यमाला. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल. ल.
 ल.
 ल.
 ल.
 ल.

॥ १ ॥

सुखावति ११३
अष्टावक्र

युगम. विचित्रवस्तु ॥ सिंह. न. ५५. पति. की ३२ ल
लितासनाऊयऊय ॥ ॥ न. पालहायन. धनसफनिध
न२ दुर्दुर्कगुहमि. सोम्यवा ॥ ५ ॥ ॥ जानक ॥
तालपाईकीकाल ॥ ॥ सुखावतीरुवनव्यन. वी. भ
मिना २०५५ गत गिना धन. वीलाकव्यन ॥ ५ ॥

नमानिगीमदमाप. पाठा लाकव्यन २ अष्टीगडपा ज
ध. बुतनाऊव्यन ॥ ॥ क्रीकानवीशाहव. वनकम
लासन २ सुखउहन. सी. तहपनचिह्नः ॥ ५ ॥ ॥ गुहव
ईलपनेक. पद्मदलन २ मकुटऊयशुट. वीलाक
स्त्री ॥ ५ ॥ ॥ सवसरुधनित. अष्टयमृडा २ वीलाका. ५

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

पमाला वनप्रदाता ॥ ॐ ॥ वामकतधृत कर्मजलपत्र
प्रिदीपसूक्तक नृहृदयधामिना ॥ ॐ ॥ जनमश्नत
पापकुर्यकनश्चानयति प्रमृत्वान् सखावति प्रविर्त
॥ ॐ ॥ नागकनदि ॥ तालनृक ॥ ॥ जलनृपधामिनि
लिनिनेकुननिनेकु ॥ १ ॥ नृनादिक नृनेनक नोमि

स्वल्पदयुग्मे ॥ ॐ ॥ नमामि ॥ श्री गुरुभ्यो नमः वि २ मुक्ति
मुक्तिदायनि जगतजननि ॥ ॥ प्रिदलपद्माहव सह
प्रमृत्वप्राहल २ द्विसहस्रदार्पण विष्णुनृपधामिनि ॥
खगाम्बल ॥ ॥ विष्णुनृपधामिनि ॥ ॥ सत्वदहन
॥ ॥ नाहितनमाल ॥ ॥ विष्णुनृपधामिनि ॥ ॥ नात्रहीद्वि २

शिवकनका ११५
१५५१

सिंहन. लघिनां ॥ कु ॥ तं नांका ३ ॥ द्याघनन. डत्रहा
 थं. घनगुधनां २ रंरुमूलं अंरुसुव. धं. त्रिनां ॥ अंरु
 नांरुहनीमाहनी आकषशिं २ आदिमध्मनं ककगुरुं. क
 ल्याशमिनां ॥ ॥ स्वर्गमध्म. पातालं. त्रिरुवनं २ गंशं
 तिपू. किन. हर्व. कार्यसिद्धि ॥ कु ॥ नागनामकत्रि. ता

लमाध ॥ सचिद्रूपज्ञात्यन्त्र-धनवलवीजादुख-मंड
लसंस्थित-मर्वापत्रिश्चक्रनिष्ठसिंहापत्रि-नाडित-
जिनवर्त-वज्रध्वजध्वनी-प्रह्लापुर्त ॥ ५ ॥ नमामिन्नी
महा-वेनाचनबुद्ध-जगत्सुखस्थिति-माकुप्रद ॥
चतुनवदन-लवतमूलमूर्ति-अपत्रपीतनीला-नक्षत्र

र्व ॥ जगत्सुखधर्म-चक्रप्रवर्तित-नक्षत्रलोलच
द-लवगधनीश्चक्रलहानदान-पुस्तकधनयन्-वाद्य
चापास्त्री-१: लवनी ॥ ॥ प्रह्लापायधर्म-चात्रिलवज्रध्व
०-ध्वनिर्जिनवर्त-लवतदह २ पुष्कवर्चिनीव धि
जतनसिंहवर्ण-पद्महर्षादित-गीतवर्त ॥ ॥ दिगानि

म
१००
नमो

आमर्चये. मित्तव नाधकृ. विव्यतिथी. र्मवास
नर प्रकृचनक्ष. सिंहनाजाहिधनन. यत्रिवात्रसहित
न. संपूजितं ॥ कु ॥ ॥ गगकक ॥ तालवर्ककाल ॥
मेशदवकतणी. नमपालनासने १ गंधमादनलभप्र. मा
सीतप्रवित्री ॥ कु ॥ नोमिणीनमावृद्ध. तवप्रदकमली २९

तस्मिन्लभय. विनाजितरकापा ॥ ॥ श्रीठमव. श्रीरु. गृ
द्रकूपादनलभ १ दानेदादिरिकुगली. त्समायधोपीचा
ल ॥ कु ॥ तस्मृदशदनाद्. गंधमादनै १ समायधोधर्मसि
नी. सस्मिन्लभय ॥ कु ॥ आधिशीप्रसूती. नकुकतपूर्व १
महासत्त्वमूर्ति. दर्शयहिकुवः ॥ कु ॥ ०० तिष्ठमवयनस

ह्यात्र च कुचिरेर्भूक १ पाहिना खिउह मि. ताहित
 काले ॥ कु ॥ महिस्वर्गमय. प्रकाशितचेत् १ पाहिमी
 दव. सत्त्वानपितकु ॥ कु ॥ तवपदकमल. पूरितप्रसादा
 त् १ महात्रधनप. वासहतीनाकी ॥ कु ॥ सतगुनचनरी.
 मस्तकधनरी १ सननिशीपग्रहर्ष. चेत्पर्विवगीती ॥

॥ कु ॥ ॥ नागाविरास ॥ गालनाथ ॥ ॥ सहप्रदलमाथ
 कातीनप्रबुद्ध १ प्रकनरी. नानाकुसुम. रुलजात
 ॥ कु ॥ नमामिशीधर्मधनु. गिरवननाथ ॥ लमप्रक
 गिति. प्रथमकु १ ॥ ॥ सर्वदवासुनवीदित. चनरी १
 नूनकवीचितसिद्धिप्रसादा ॥ ॥ इर्मवाधिसुख. गा

सप्तमस्त १२१
 धर्मधनु

लवपक १ अनाहृदिग्रहगुरु ॥ ॥ अरुध
 गु. अरुधेनवथा गिनि १ अरुधकतिधिदिन. नकुगु
 वात्र ॥ ॥ पूर्वदक्षिण. पठिचमाकत्रदिग १ नीलपी
 तनकहमिता १ ॥ ॥ पंचद्वित. पंचद्वितस्वत्रया १ च
 तुर्दवी. चतुनमर्त्ति ॥ ॥ पंचपुत्रित. णी ॥ ॥ किपूत्र

अत्र १ अत्रगत्रादिसिद्धिप्रसादा १ ॥ ॥ एतद्विद्वि
 वद्वचत्रितगीता १ अत्रम १ गुरुमाकुप्रदाता ॥ ॥ कु
 नागगु १ नी. तालमाध ॥ ॥ लाहितवर्त्तितन. दिह
 अमकवकग्रा १ तगनमकु १ कठ ॥ ॥ वनग्रिन ग्रा
 नमामिबुद्धज कितीतिहवनमाहिना १ दवादिग

मानविद्युविनामिता ॥ ५ ॥ सत्यकनभ्रविदामसु
किंपागुधनिता २ माकुपुनमहाकुन-रुवापुव्य
हस्ता ॥ ५ ॥ हानुमीतलमाकु-उदियानगमना २
नानानल्लप्रासाद-सकतेप्रवविता ॥ ५ ॥ अहिनि
शीहमनन-विद्याधनिमाता २ सुगनगुप्तहानसि

क्रिमाकुप्रदा ॥ ५ ॥ ॥ नागवैगमन-मालवणी-ताल
माध ॥ ॥ अकमुखगिनयन-कलधनवर्ध ॥ २ मकुट
हृल्लसित-अशिततिवृद्ध ॥ ५ ॥ नमामि १०० वी
महागोपश-मातगश-हृगसित-गीतशत ॥ १ ॥
प्रथम-कनक-वर्ध ० ॥ अशित-१ ॥ वषवडी-समी

5

10

लिङ्ग-नालिंगनम् ॥ ॥ द्वितीय-पुनरुद्भव-धृतखड्ग
 पा० २ तत्र शिर्ष-उलमाय-विनिहितज्ञान ॥ ॥ एवम्
 त-तान्त-प्राज्ञ-ल-लान् २ स्रजन-वैदित-तवपदक
 डी ॥ ॥ ॥ स्रगुन्-चन-मरु-धन-रुनकिणी
 गीम-स्र-नासधगीत ॥ ॥ ॥ नागक-नालपद

श्रीवज्रशक्ति १२४

कीकाल ॥ ॥ गीवज्रशक्तिनि-हृन्वनाया १ प्रिरुव
 ननाथ-दहिममाता ॥ ॥ ॥ विवधित्रमहानस-महा
 स्रव-ज्रनिया ॥ ॥ वज्रद-विह्रनिया-अनूकनज्ञान
 ॥ ॥ ॥ उर्ध्वनातिप्रिदल-कमलसंयाग १ दहिविला
 स-प्रवतसंशदिया ॥ ॥ ॥ गुंजयित्रपंच-महास्र

खखलिया २ वन गिर सविन वागु सिद्ध वि ॥ ३
 सतगुन प्रसाद चतुर्भारिषक प्राप्ति ठवति सीसा
 नसमुद्रा ॥ ॥ नागकैलास माला छट्कै काल
 वदन धात्र गणी वागु सिद्ध वि प्रियनयन नकीमी
 धिगत क ॥ १ प्रथम गुण दय विष्कपाल धनी

अथ नगुण दय खड्ग छट्क धनी ॥ ॥ नमामि २
 दविठ्ठी महिमा सनी सकल अद्रि सिद्धि प्रदाय
 नी २ विठ्ठल व्यापिनी विठ्ठल जननी २ वीरवीर ठव
 न यान न विधी मृत्पुत्र नागु न कुदनी ॥ ॥ मृग
 माला एतत्त वक्रि समदहा प्रहलित गिर सवि

वदन गान १२५
 वागु सिद्धि

नल्लमकुटुम्बानी १ गीतीकुम्बानी २ द्युक्तानल
लालजिह्वा नृसुत्रसंहारा ॥ ॥ एवमयः खविना
भित्तकारी यनसत्यस्मरत नृसिलाषप्रसिद्धि १
शुक्तिमूर्तिः ललदायनीद्वी १ नृम १ श्रीवाताही
नृम १ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

天啓壬戌

המחלקה לבריאות הציבור

श्रीगुरुगणेश्वरसदृशनाथः प्रह्लादमैठिलनिर्मिताया
मि॥ प्रथमतः श्रीगुरुमैठिलनिर्मिता वज्रधक
मलनिर्मिताया २ यैकात्रजाता पूर्वविद्धा न
कात्रजाता जीवाक्षीप २ लेख्यप्रतप्ततावलि चैड
रुद्रकनूत विविधिततता संपूर्ण २ याउपक्षीप

विष्णुसिद्धिः ॥ अदिहिकोर्ध्वं श्रीहृत्मा नमिमादहरा ॥ विष्णुसिद्धिः ॥ अदिहिकोर्ध्वं श्रीहृत्मा नमिमादहरा ॥

ॐ
ॐ
ॐ

नाउपधीय लाउपधीय वाउपधीय ॥ गऊत्रतना
पूत्रपत्रतना ॥ अठवत्रतना स्त्रीत्रतना ॥ खऊत्र
लमसित्रतन वक्रत्रतना वासर्वनिधानसंपू
र्णः ॥ १ ॥ ॥ नागपुत्रतना ॥ नागपुत्रतना ॥ अनिल
अनलजलजीवनमा ॥ अत्रमैठलवक्रत्राया ॥ व

अप्रीकत्रसत्र जात्रसयत्रा ॥ अत्रिहृत्त्रवत्राया
॥ ॥ नागपुत्रतना ॥ नागपुत्रतना ॥ अत्रिहृत्त्रवत्राया
हृत्त्रवत्राया ॥ वक्रवात्राहि अत्रिहृत्त्रवत्राया ॥ सैवत्र
वक्रवात्राहि ॥ कुतीनवीत्रवीत्र अत्रिहृत्त्रवत्राया ॥ तहि
तहि अत्रिहृत्त्रवत्राया ॥ अत्रिहृत्त्रवत्राया ॥ अत्रिहृत्त्रवत्राया ॥

निवासि तमाकात्रा रुवमास किः सूत्रसूद त्रिनव जो
वन्ता ॥ नगासि रणी वात्रुतिन विमः वजो नृ नय
जानम गादकी ॥ ॥ आलीठ पद (१) म रुति मान स
नस्थितः भक मूरवगिन यनः अत्र हव धं २ असा द
ठा वा रु धा त्रि गो हयः कन वात्र ठा न ऊपः द्विती यक

प्रः पाणी कू ठा यः पत्रः ध्व ऊग ठा घी लः व ऊ व न द
क प्र थ म स व २ अ प त उ र्धु ऊ रु ट क ध नू व ऊ
वी ध र्व धी गः क सी उ ल् २ गि डू ल मू न त्र व ऊ वा लः
ग न यी ति त द नू क सा कू त्र २ उ ह हा डी ह का न ह त्रि
त व र्ध गु कू त्र नृ ता का त्र रा व यी ति २ त व क नृ ल म

...नमो भगवते वासुदेवाय...

कतिनासाखीउवाहा नृपिनी वपुन देवी की उमा वि

लीसा कु ॥ सतिगवद नृडा कु ती वाची न उयन हन

मिन्न नृपमवक ह नृददासा कु ॥ ...

... विदल सशानृ ह दितकन

... सगल सरोवरी हय विष्णुनामगमन विष्णु ...

मै उल नाडित पिखवन डलनी नगतकन उत्र विनि

नयना मानव पुन गहा कुदली कु ॥ ...

... हयितन न गिन माला कनल कुलिश

इतिनात्र वाक धितान यिस ह डल नृपिनी कु व

... की १० की ० क १० मल ...

चकककि म्पुम विल नन रान्पुन रु हसा क
 हवप्रलयानलतजधत्रंग राहिनि हानकनामा
 लावाणवविवर्जित न्नक्तत्रगग हसैन्पिनी ध्र
 पइमवइ पदतित्रगतधत्रिमा मवयिहासकु
 लिहम न्नक्तत्रसिद्धि माकु प्रदायनी प्रहमा मि

वसमासुदीदधितनसाधी कृपादधनसदनेनमधम न्नक्तत्रगीजधितवाहलला वरीगहसमं वृदीप्रदि सु

अ
 म्
 म्
 म्
 म्
 म्

श्रीवइजगिनी क ॥ नाराकह ॥ गालनाथ ॥
 कर्मदा कुलिदवि न्वदविघ्नने समत्रसुनास
 त्रवीदितावनहा ॥ क ॥ नक्तत्रगीजधितवाहलला वरीगहसमं वृदीप्रदि सु
 नक्तत्रगीजधितवाहलला वरीगहसमं वृदीप्रदि सु
 नक्तत्रगीजधितवाहलला वरीगहसमं वृदीप्रदि सु

॥ निरसि सिद्ध नमः ॥ ककुलनमः
 मरु ककुल निरूपत्ररुत्रि गो वाना ॥ कु ॥ कत्र नि क
 मालकात्रि मूठमालरु मिता ॥ स्कंधरव ह्रीं ग कपाल
 मत्रिगा ॥ कु ॥ रुनयिसूत्रत वड वा कुलिदास ॥ २ ॥
 वड यागि निवत्र द प्रसाद ॥ कु ॥ ॥ त्राना गुरुनि

॥ मलमद्रुमा ॥ मरु नृसत्त वरुणम ॥ श्री विना र्कधरा विलगो ॥ नैला कृता दकिता ॥ ३ ॥

॥
 ॥
 ॥
 ॥

॥ अमलप्रिदल सत्रा नृहविना डिता ॥
 प्रिरवन सवत्रा वत्र नुकनूपा ॥ कु ॥ ॥ त्राना गुरुनि
 विदरु वरुण ॥ श्री दविठि ठा कत्रि प्रिरवमागा ॥
 नारि मूठलमाऊ जुवन वयत्री ॥ प्रिनिरुदिनि प्रिनय
 ना ॥ प्रिनितल प्रय कुत्र प्रिरवमा पिता ॥ २ ॥ अखमनि

विद्यामिनीकान्वितालगादा स्वर्गदहंतीव प्रसादि शुक्ला ॥ श्रावण ॥ स्वस्माना प्रययावसत्वा सुधूसरीगीपदमालीय ॥

ॐ कि नीला मा खं उ नो हा नू पिनी वा निमा प्रच ड वा
पिमात्र का मवा क विहृ तिनि रव वन दान पति या
धुर अवगा न्त्र साग योगिनी भत्री समन सहा व
भूषण ललन गी ह नू ब क
येव र धा गो क न नि बा न सम ज्ञा न

विष्णु कृतं दशादि गद्यो बलः नानुत्तरं
दानप्रतिविष्णुनित्रवा नृत्रं ॥ ५ ॥ रुं रुं रुं वीत्र वीत्र
उत्तरं वलिदान दहा दानप्रति गुरुत्त वता नृत्र
॥ पूर्व वेनावन दक्षिण तत्त सैरु क पठि स नृमि
नारुतिन व्यापियात्र उक्त नृम सध सिद्धि सा ॐ नृका

॥ वात्रिमात्र वड वकु अपियात्र ॥ समाधि ॥ सै
वत्र नारु काल वकु हव इ विठ्ठल कालुत्र नाना वाधि
सत्त्व नारु वीद भत्रिया वात्रिमात्र वड यापियात्र
सिंहना दवाडि यात्र उम नृ वा डी ग नृ या गिति म
त्रि सिद्धि यात्र उम नृ वा डी ग या नृ या गिति म त्रि

भक्तमाला कत्र बल्लो वलीन स्थनली य ॥ जय ॥ ३० ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ ३१ ॥

यात्रः जालेधत्रिपुयाक र्दमास वयिआ चात्रिमात्रव
उचक्रुधायियात्रः ॥ ३२ ॥

नमस्कृताकात्रः एतत्त्वधनः सा नु विसत्त्व उ
कात्रः एतत्त्वसा ॥ ३३ ॥ ॥ जलद्वि ॥ ॥ जलद्वि ॥ ॥ धवलस
सेखवदहधनः सत्रद सुसाहियकात्रः एतत्त्वसा ॥ ३४ ॥

दीदत्रालिंगान जगधनः वक्रयै ॥ नृजालय नृनृति
॥ ३५ ॥ ॥ मायाविह हवितिनजगुः साहिय वक्रसत्त्वप
नमोवधनः ॥ ३६ ॥ ॥ काल इतिमानः
नमामि २ दिनधगु कनेउक चगुन नृनृति जाले कसा
॥ ३७ ॥ ॥ धीव हानदीवकागु ० वनूपा वृद्धधर्म जालयधनः ॥ ३८ ॥

नमो हरे उगतासु सा न उ हानि वा नना हन नमा हरे
पञ्चकनकवना ॥ नमामि र श्रीरामेति पुनरुच्यते नमो
सिद्धि वनदायनि इति गहनसर्वपापकृपे कनका
नक्षत्रं नृमा क प्रदा ॥ कु ॥ नमो नमो
नमामि र धर्मदा पुवागीठ्यते पाठो इति मिति

नमो र पाठो गीतस्य नरुनकात्रा सर्वदेवपतिनेति
नाम नमामि र वागीठ्यते मीठुलपत्रागिनिनिवा
सिता सत्त्वविमाहित इति गीताठान प्रसमा मि
इति वक्तुं ठ्यते ॥ कु ॥ नमो हरे नमो ॥ ॥ ॥
नामो हरे नमो ॥ नमो नमो ॥ विप्रै वि ठ्यते

विप्रै वि ठ्यते

श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीगुरुभ्यो नमः

मना रोगसयत्रा रवेयु सत्रवत्र उत्सति या द्वा ठि
मकु सुमसैकास धात्रीत्रा ननुपमउत्रवत्र उत्स
ति या ॥ वामकत्रां टंक देहिन कत्र वंजिनगान मं
कुटकं ठिया वृक्षकृत्राहित्र वित्राहित्रवात्रि
धौदियाधत्रिदवि क्षलमिया सूर्यमं उलमा ॥

उदयत्रनीति नीत्रसैहां व स्थिति या कत्रहासैहां
व प्रिवयित्रनीति थनहनमयन उत्सति या
त्रथित्रथित्रनहायित्रघैदत्र नवधूवत्रालिन
कालिया ॥ सहजानेदः महासूर्य क्षलमिया वृक्ष
जाकिनिदविप्रकालिया कत्रहासहात्रस गिरव

卷之四

[illegible]

धिमात्रवल विचुविनाशन आदि सिद्धि वत्र प्रदा
 यति ॥ हरेगुरु वेंगुनिर्वेधन ताउन भावयऊग
 ततात्रयेंगु ॥ प्रहववकपत्रमागुत्र हगति
 रावेंगुरु वेंगुत्रिपूथप्रदे ॥ ३ ॥ ॥ ॥
 यिकत्र आदि वृक्षप्रमठवत्री ॥ ४ ॥ ॥ ॥

सवर्षप्रदास सूरप्रमसव ॥ नील निवाले वरमात्रही ॥ कीता प्रदास धनिवसि ॥ माने जना तमकनीप्रदिशु ॥

५
 ६
 ७
 ८
 ९

नाना नाम कानि ॥ गालनाथ ॥ कमलविका ठि ॥
 स्थितिछासन कुम्हदप्रियवर्हसन देहा ॥ वगु
 नवदनकुवलप्रदलासन नगुप्रकाशिता ॥ ५ ॥
 नमामि ॥ श्रीमहासहस्री सकल गुणनामसूत्रमु
 न् ॥ ॥ कुमतिदहन हानप्रकाशित सर्वरुहाननि

गंगान्तरं जगत्तयाति न। गुह्यं वचनं न। ॥ गर्भे गायका
 सात्रं वामपादितलं वत्र ददहिनं यत्कमलनाम
 सकृद्विधाति तं नमि ततश्च गतं नमरा सूत्र न
 त्रयत्रक्षणात् २ वगुत्र नानन वगुत्र पौर्वकमस्व गि
 तयन वेदि त पदपैक ई २ सतगुत्र वत्र द मस्तक ध

त्रयं एनामि सुधा हर्षं रुवह तर्षी ॥ ५ ॥ ॥ जगत्तया
 सकृत् ॥ गालगाथा ॥ ॥ नृत्तं हीति रुदह पद्मासन
 स्थितं कान्त्तमानसनिर्मल हृदया ॥ ५ ॥ ॥ जगत्तया
 ग्राह्यं जिला कंठजं गुणितं गुणितं वत्र प्रकाशा
 हितं त्रयं तत्र तलं विनम्रं कलितं विविधमसि हात्र

२
 ३
 ४
 ५
 ६
 ७
 ८
 ९
 १०

ह विना ॥ द हिन वत्र द कत्र वा म क म ल ध वत्र विना
 ल न ध न ह ला वना ॥ त्रि सु व न व्या पित स त्व ड डा त्रि
 या स यत्र म ना त्र थ सु व व्या पित ॥ ह त्र न त्र य कु म
 स किं न त्र स हित पू क्तित स ग स शि प्र ध त्रि या ॥ न त्र
 क ति र्म क बी त्र वि का सि ग दा गा इ त्र स र पु क्त ग त्र स

२३
 १
 २
 ३
 ४
 ५

मि ना ॥ क ॥ ॥ ना ग न ॥ त्रि ॥ ग ल ना थ ॥ श्री क क पा
 ल मि त्रि सु व न नि वा सि त श्री न मि ता रु व मो लि ध न
 ॥ क ॥ न मा मि श्री ना ले दा दि ला के व न त्रि सु व न व्या
 पित स र म ग सा ॥ म शि म य ॥ सि त प्र व त्र ड टा ध
 त्र न क व द न क म ला स न ॥ वे म त्रा ग सी ग त्र न न्म क न

आलिकालिआलीठवनस्त वयुर्मा
त्रमर्दनरवण्यहत्रस्त क ॥ वदवदनदहननय
नश्चनत्रसपूजितसेवनवनस्त क ॥ लिठ्यलिइत्र
साईनिठान मेडितामप्रस्त केठलदनस्त क ॥ जनेन
पदीयउईमेवनाय ठागकाटिघेननायदयकनति

॥ कु० वादि तउमन् धनि तख छीगा ॥ गी कू कु ० न पा ठ
 त्रि ठूल ॥ कु ॥ सन्धि नम द म झा सव ल द ॥ पी मू ध मू
 त्रि त क नो ट क ल ठा रि गा ॥ कु ॥ क न ति स न डा स न ति न
 ध त्रि ता स घ ह न न न ति न माल ली वि ता ॥ कु ॥ स न गु न व
 न ध म स क ध न ह ॥ न न ति स ध ह र्प स व न गी त ॥ कु ॥

॥ न ग न न ठ क ॥ न न न ॥ ॥ सकल जग त गु नू स व न वी
 नार न न ध म क नू ह क त्रि त स ख वि ता ॥ ॥ स व न र कु
 न न धि ता ॥ ॥ वि वि ध वि क ल्प वि नो ठ न नू टा ॥ कु ॥
 द वि द न हि तु क्त मी ठि त द हा ॥ स व स य ह न ह वि ठ म
 ल वि ल म ॥ कु ॥ सकल वि ध न हे ति म ति प ति न् अ २ ग न

卷之四

खरखरवाहि स्वाहि नलि पूजाने व घ घा ट य घा ट य वि घ्रा
 न्त्र घी यामि यात्र सर्वे व ठा नि न्त्र पी व हान सर्व वलि ना
 सर्व य ऊ ना क सरुत प्रत पि ठा वली न्त्र प स्मा न्त्र
 ठा क ठा कि नि ड् यि न्त्र ष्ठ ठा म ठा न्त्र ॐ दी व लि गृ ह्ण गृ ह्ण गु
 ता ॥ ह म या न्त्र की गु दान प ति न्त्र सर्व सु ख से व क ठा ति न्त्र

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

आनिशमन वनरुहसमन कर्पूररुनयितौ वाजा
 गगनाननवात्र वेधित्रजासा मर्ममैठलरुवलीना
 प्रियवचस्वहीता कालिगताही वत्र पयिनापि व
 न्मरुवतात्रा हसवित्राजित वक्रवात्राहि सु कविन्दवि
 र्देवात्रा गगनविलीला वक्रजायिया वत्र सतगुन

ॐ
 नमो
 भगवते
 नमः

तस्य भगवत्सु सप्तमाने द कलिगताही उलरुही वत्र
 कवात्राहि क गगनाननवात्राहि मर्ममैठलरुवलीना
 वक्रिर्देउलर्दे उन्दवक मरुवलरुवित गी वत्रैठलत्र वि
 त्रमाला सप्तवक्रि वक्रिनेया ए सवि रुवित गगनानना
 त्रिवर्धनिकात्रा क गगनाननवात्राहि मर्ममैठलरुवलीना

वक्रकटाटक हाथ धनि मा
कै ८० दिन रुख ही ला र ही पू ग जा गि नि क म ल वि हा सि हा
मा महासुख म नि प्र सा द व क वा ना हि मा ही मा स से व
न ना व मि व रु वी ह री ला वा नु त्रि का ले की दे ति ह न
व म र्छ सु व रु ल न प्र सा द म ह रु रु धि ने मा म नै ति

क र्त्त पा ह न व व त र ह प्र सा द प्र हा ना हि मा हा ह न व
नी ल व र्त्त वि हा म यि ठ र व क न र्त्त क
ग म र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त
ल र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त
रु व ही मा क पा ल र्त्त क र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त र्त्त

वृत्तान्तः ॥ मात्रयित्रनापियादिनामाया. सहणुलं
वृत्तललीना ॥ ॥ पाठा वृत्त भूत द्वादशा हाथ धनि पाउ
नत्रठिनामाला ॥ विठव कूलिठात्रु चैत्रडा इत. व्या
प्रचत्रमषट्मूडा ॥ ॥ नालीट प्रपाहन. वासयित्र
॥ न. कालिनापिदिनमूडा ॥ नीलह नितहाहितकन

कामय. वडमुखत्रागिविकत्रात्र ॥ कुतीठावीनवी
नवत्रनामक. पिनिचक्रमहावीनवीत्रा ॥ कनूहासत्राग
वीनवीनवत्र. पुंड्रयूलयत्रसेसात्र ॥ कु ॥ ॥ ॥
अलावर्त ॥ गालत्रैगगा ॥ ॥ दिपुंड्रदिमुख. पिनिनयना
॥ मकुटकहादिगीवत्रा ॥ कु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ वासकना

21
15
14
13
12
11
10
9
8
7
6
5
4
3
2
1

[illegible]

किनि॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ त्रिनि
नयुद्वीपे वनप्रविष्टा ॥ ॥ पूर्वउक्तत्रयविमलदक्षि
प्रदिशा ॥ ॥ त्रिनिदीयनिचउत्तिकैवाङ्गनी ॥ ॥ चतु
प्रदिशा ॥ ॥ त्रिनिदीयनिचउत्तिकैवाङ्गनी ॥ ॥ चतु
हनि ॥ ॥ त्रिनिदीयनिचउत्तिकैवाङ्गनी ॥ ॥ चतु

॥ लामुनवद्वीपस्य मयूनास्य विद्वत्
पुत्रस्य पुत्रस्य पुत्रस्य पुत्रस्य पुत्रस्य
पुत्रस्य पुत्रस्य पुत्रस्य पुत्रस्य पुत्रस्य
पुत्रस्य पुत्रस्य पुत्रस्य पुत्रस्य पुत्रस्य
पुत्रस्य पुत्रस्य पुत्रस्य पुत्रस्य पुत्रस्य

यागवर्षे मल्लित ॥ नाल इति मान ॥ ॥ नृषु दलस
 नाऊ. उरुव प्रकाशित २ श्री ठम क म न व न. ॥ न
 लाचना ॥ ॥ ॥ दहिन व क पा सि. वाम क म ल पा सि.
 नमामि श्री धर्म ना नमो हा मुनि ॥ ॥ दहिन कि कि नी ध न.
 वाम कुं ठि का पा द. विचित्र वी व न ध नि. नृषु य प्र दा ता.

का नृह्यमानसः निर्मल हृदयाः जगत उद्धानसः विलस
 प्रदाता ॥ ॥ जनमः सुगत च न ह कमलः तुक्कसम
 न ह मम मातु प्रदाता ॥ कु ॥ ॥ नागवैकट्यः ताल
 बद्धकालः ॥ ॥ तिरिचिनिनाजः मनुनाज प्रलाव २
 हृत्ताच्चसमसिधः पर्वतमाज ॥ कु ॥ हवसीधीमाजः ग

जावनीतीर्थः ॥ ॥ वसंधनादवीः पादां वृजजाजः
 धर्मधः तुवागीठवनः पाद्यनिमिस्तः ॥ कु ॥ हनिगुन्याग
 वादठावर्धः तिरवनदयाः जलमधसवा ॥ कु ॥ नल
 पुचमरः ॥ ॥ हनुमदवलाकपालः २ निवसंति जलनूपः
 हनिगुन्याग ॥ कु ॥ हविताईकाटीः दुयः तीर्थः सं

ॐ ह्रीं क्लीं नमः ॥
 जगत्पति

ति २ आधुपंतिक सनूपा नागग सहाहेता ॥ कु ॥ प्रसा
 वसिसंगम वागसति संगम २ गंगम वमूना सागनसं
 गम ॥ कु ॥ वेदवा क्रिन्नर संनितव २ कार्त्तिक कु
 कु विष्वातपिजीय ॥ कु ॥ सतगुनर नन स मरुत
 धनहार सनसिख धन द ती रेनाक्रमीत ॥ कु ॥

श्रुति न ३७
 सनसिख

नागसधुनत ॥ साहसइर्जमान ॥ ॥ नृगतिनिहित
 कलु मविदन स दव विपुं त कनहाडाध नाया २
 सननननाग यजग सवंदित दवविपुठवन
 सवव्यापिता ॥ कु ॥ ननादि २ श्रीग सपतिव न स
 कडिहिलिपिपनया वति ॥ गजमुखि नयन सी

वादन नृत्ताधिपतिग (संठन) ॥ सांठवपदमृति
नावहादह नकवर्मिहाहाला २ नलाहनहा विह
चित्तदहा छाद्यनमनाह नना ॥ ॥ क... वाह मि
नि वनतिवाहाला हवसहसंरिधिप्रका ॥ ॥ जन
म २ मानुगहापाठिठान (सं) नृहिमतसखरुलदा

यति ॥ ॥ सतगुनचन (सं) ठिनगतधनिया गभव
यिदासमंतगोता ॥ ॥ नागहेनव ॥ तातजडुकंर
स ॥ ॥ धर्मनाठमसन यमनाठवाहन मानसंठास
न विघुनिधानहा ॥ ॥ यमोतकवीन दठाकाधहीन
सयादधिहीन मंठलकील ॥ ॥ खगपधवर्षिकुंठल

कर्षी. सीमतिनयन. वस्त्राहारनक्ष॥ ॥ कुलिशमूक
 न. तर्जनिपाठा. धनचतुः कन. अष्टाष्टहास॥ ॥ प्रहं
 तकपुहति. वीनसंस्त. गद्यवीनसेन. वीनठवनस
 हित॥ ॥ पद्मीतकवीन. विद्यांतकवीन. डेलाकवि
 रज्य. दालानलसूर्य॥ ॥ हनूकवड. पनमाठ

वड. उक्तीषवर्ति. शिरनाजवीन॥ ॥ अष्टतयह
 नक्षी. अष्टेष्टवर्त्यहनक्षी. कुनूतवचनक्षी. सततीठा
 नक्षी॥ ॥ सतगुनूचनक्षी. मस्तकधनक्षी. सनति
 अमृतवड. यमौतकगीत॥ ॥ ॐ ॥ ॥
 नागहैनव॥ कालअष्टककाह॥ ॥ चैठाशु

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ठामठमनः ठीनसहजाः वासुकिनागः गर्जिः
रमया ॥ ॥ गङ्गनठीमठमनः नूठमकहजा
चूर्णितमयाः तनुकनागः ॥ कु ॥ ठूठुयन
ऊलमकुः लूनवद्विवायुना कुतः दिगीविदिगं
बलिगृहीतुन ॥ ॥ मृष्टठीमठमनः चूतीठा

वीनठवनः नाचपिहहजाः नन्दन ॥ ॥ कंक
लिधानाः बर्णितमयाः क्षालां कलाः कर्काटः
कनागः ॥ ॥ कलंककुरुनवाः बर्णीमयाः सनसि
ऊनागः चूतकहजा ॥ ॥ मृष्टाहहासाः ठीख
पालनागः पुचंउमयाः वटमहीनहा ॥ ॥ ल

श्रीवर्धन कनकवकुल घृष्टे तमघा महापद्म
नागम् ॥ ध्यानठानठमन प्रकटितवकुल म
नंतनागम् पूनक्षमघा ॥ ॥ किलिकिलिलावा

रुईन वकुल कूलिकनागा वर्धनमघा ॥ द्वादशर
ता द्वादशशुवता बउवमवदना द्वादशतयना
रुनयिकर्षपा नामद्वान्तन कालिना गिरिपू वाप
विद्वन्नाम ॥ ॥ नामकुरु कालिना ॥ ॥
नीलकण्ठ नाम प्रकलितकिनहा ॥ उई विगलकका श्री

निनिगन्तमशुलाकुलाभा ॥ पूर्वउत्तरपश्चिमदक्षि

किनि. धा न व माल ठा किनि. वं जाल ठा किनि. वृ गु न

द्वी॥ ॥ हिंघिनि व्याघ्रिनि ईवृक उला किनि खट्वा म-

पत्रगुर्त्रकूठाहृक्काः॥७॥ किनिदीपिनिःचउसिर्दवादि

नी. ध्यात्रर्लवाद्यत्रकाठवद्वती॥ ॥ जिनजननिद्वि

ॐ किरि. गुरुप्रमिष्ठान्त. दीवमुद्रा. आश्रय. लम्प.

या २ ख पू ट क व कु र्थ ० ख द्वीग पा ठ म प्र हा मा नि य

विद्या हानं ध्वत्री ॥ कु ॥ ॥ ज्ञानं देव नम ॥ गालि ॥ ॥ ॥

पूर्वदिगोचलयेताग्रममनेः द्रविर्वैष्णवविहंसा

丹桂香

सन्निः कु ॥ नव नव न हाता लग ॥ ५ ॥ नव नव न वी न ॥ ५ ॥
॥ ५ ॥ नव नव न हाता लग ॥ ५ ॥ नव नव न वी न ॥ ५ ॥
यो सचि जगि नि मा न ग ह ॥ नो ड लु व न श्री न्रे सु ठ न
ठ न नः रु त प्र त पि ठ न व ग ह ॥ ॥ ३ ॥ नदि गी व ल ग क न
ठ म ठ नः द वि नो ड श य ति वृ ष वा ह नी ॥ कु ॥ प ठि म दि

गी व ल छा ली कु न ठ म ठ नः द वि ठ्ठ श य नि ग ड वा
ह नी ॥ कु ॥ द क्षि ण दि गी व ल क ली क ठ म ठ नः द वि वा
ना हि न हि वा स नी ॥ कु ॥ न्रे लु क ण या नौ व क ठ म ठ नः
द वि को ना त्री म नू रा स नी ॥ कु ॥ ने न्ना प का ण ल क्की व
र ठ म ठ नः द वि वि पू वि ग न्ठ श स नी ॥ कु ॥ वा मू व क



शिव

वह



शिव
दत्त
वह

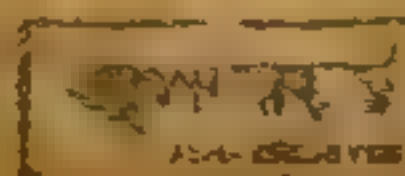
पञ्चसहस्र

श्रीमद्भागवत

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

भक्तगत. निरीजननाया २ सर्वभूत सुविधा नदयेति
 निरीजना ॥ कु ॥ ॥ गगललित ॥ गगल ॥ ॥ नृप
 वनश्री. मंरुकुमाता २ गगलनकिनहसम. कीवनद
 हा ॥ कु ॥ ॥ दवग्रीमंरुकुमाता. गिरुवनन्यापित. पपपप
 श्री. कावनदना ॥ ॥ श्रीकृत्वकुगन. दहिनकनक्षत्रि.



सर्वयोगसिद्धिः
पञ्चमः

साहसुप्रमर्दिनि. धात्रकपिल. खड्गकत्रिणा॥ ५५ ॥ नमामि
 श्री. महाप्रतिपदायै वि. इत्युक्तं तर्हि निपाता. वक्तव्यं निर
 ॥ सितवर्धसु. गिरिग. विष्णुकमल. वज्रपार्श्वक. मध्य
 विजयी॥ ५६ ॥ दहिनदिगमहा माया ददी. महा मायूनि. ह म
 प्रण. श्रीकात्रमहा. हाना कृता. विनामसि. नलधारी॥ ५७ ॥

यच्चिमदिगमहा. मैदानूसात्रिति. दिव्या एतत्. विरुचिता
 २ वा नूवदनि. तक्तवर्ध. वक्रपमासुन. वनदहका ॥ ॥
 उक्तत्रदिगमहा. ठीगवति. मानविदुदनि. दिव्यनूषी ३ न
 चित्रकमाचित्र. छित्रसिमहात्रका. क्षत्रित्रसयत्र. एव
 गात्रही ॥ ॥ सुर्मादिनवग्रह विविधिसंयुक्तनि. दीर्घात्रा

५३ ५३ ५३

प्रागप. दानपति २ नूव. विष्ठाति. गात्रकीक. दविताकपा
 लसर्व. इतिगहनही ॥ ५ ॥ ॥ नानावृत्तिगालक ॥
 धट्टुक्त नूकमुख. एडचठछानी. धान्यमैडनी. पूरककवा
 म २ निधिदत्रसन. नलमैडनी. सर्वजितवेदित. दक्षिण
 हल ॥ ५ ॥ नानावृत्तिगालक ॥ ॥ नलमैडनी. पूरककवा

सुविधा कनकवर्ष नलमकुटामसि ललितासन
 दात्रिद्रुनदी **उडै** तथगत ककिसवाकठयत्र नामवकुपा
 सि ०० लाददी **॥** **॥** किवलकलैड नीलवर्ष वामवन्धु **॥**
 लुवर्ष **॥** विविक्तेउली कलिमालिनी मुखेद्रददी गु **॥** धानि
॥ नामनरुपधुज पगाक नादि हलधानि दगनद

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ३२

वी **॥** पूर्वमासि रुद्र ककिसपूरुद्र पवित्रमधनरा वेणु
 दम्भ **॥** गुफागुफा सनखमिददी वेश्मोतात्र माकु
 वदा **॥** सगहमेउल पूजिगिय जुगुतिमूगुति रुवेगुत **॥**
 नागललित **॥** मालरूप **॥** वरववसीधना पीतवर्ष
 मकमूख विचित्ररुनस लषहीया **॥** कनकरुद्र

घट. वामकनक्षत्री. दहिनज्जलयमद्रा. (४४) वना.

॥ उंबडीरुवकं. ज्ञानसातलज्जल. उंबडादृष्टि
सु. मदनो २ मदनोवडी. तववडावीधरुं. विठवरनन
सयन. निशाज्जलवंतु २ ७ कृहिमातनि. ०० दमर्घपू
जा. अकनवडा. सखपूजित २ मंडलकर्मसु. साधय २

(४५) धय २ द्रोंरुं ज्जल २ नोमिठीधनइहित. पादा
नविंद. विविधिउपहान. पूजयामि २ ठीठमज्जलसिंहमो
लि. मानवलतंजना. दविठीवसूधना. मंडललिपा
मि २ सत्गुनचनतकमल. ठिनगतधनिया. गमय
तिज्जलार्थ. संधयना २ रुमिठमधन. विदितस

ॐ दिव्योत्पन्न ४२

फलदः सर्वसत्त्वहियाः संमानतनसं ॥ कु ॥ ॥ नाम
ललित ॥ तालरूप ॥ ॥ आदिवृक्षासन्नः यन्नलत्तवो
आरुवः संतुलः संस्थितः मेवपिनि २ अकनिकाधिपतिः
ॐ महिसंः जिनात्तुमीः वडा ॥ त्वेठवनीः का ॐ स्थपि
ति ॥ कु ॥ नामामि २ ठीः महावेनाचनवृद्धिः त्रिरवन

ॐ दिव्योत्पन्न ४२

पालितः मुक्तिप्रदः ॥ ॥ वेदलपनः फल ॥ विरुमूर्ति २ अ
पत्रः पीतकफूः लाहितमूर्ति ॥ ॥ उगतः ठुष्टिः धर्मच
कुप्रवर्तितं २ इर्मतिगिनिच्छुदः असिधनी ॥ ॥ हीपूर्व
वृद्धिदानः प्रसक्तकधनयन् २ वासः चापाखीः इः रवहन
॥ ॥ प्रह्लापायः धर्मः चानि ॥ वडा ० २ धनि हीः जिन

वनी. शुभ्रवर्णः ॥ सत्गुणचनसं. मस्तकधनसंश्च वाच
कं शुक्लहर्ष. गीतवनः ॥ कु ॥ ॥ नागठंगमनमालगु
तालरूपः ॥ ॥ श्रीवागीश्वरवनवन. विकसितां हाडा.
पनि २ संस्थितहृतासन. कूदवर्धुवर्णः ॥ मेकानन.
कूवल्य. नयन. प्रकाशितः ॥ महिमयमकूट. पंच

श्री

तथागतं ॥ कु ॥ नोमिश्रीजनपवन. नीशधार्प २ स
र्वज्ञज्ञाननिधि. डोलाकृगुनी ॥ ॥ प्रथम. सव्यकन.
अनित २ खड्गनकुमति. गिनिवन. नाठानी ॥ ॥ वाम
कन. धृत. प्रज्ञाप्रसक्तन २ संपूर्ण. धर्मज्ञान. उपद.
शितं ॥ ॥ दहिन. वामकन. धनूठाने. अनित २ जनम

जनमकृतः कलषः खलितः ॥ सत्पुत्रः च न ह्यः मरु
 कधनस्य २ गमवेति ॥ शुक्लहर्षः मंशघावगीतः ॥ ५ ॥
 नागगुह्यनि ॥ तालमाय ॥ ॥ विभुः ॥ उकमुखः नक्तः
 बदला २ नगनमकूटकठाम् ॥ हिमिनयना ॥ ५ ॥
 नमोदयोः बुधजाकिनिः ॥ विः ॥ उमजलनी २ प्रिभुवनः

आपितः जिनहानदायनी ॥ ॥ दहिनः कनवद्रिः वि
 लासितदधति २ वामकनाटकः चतुर्मानसविता ॥ ॥
 तनसिमं तुलमायः ॥ उदियानगमने २ नतनः पून
 वनः सततं प्रविष्टः ॥ ० ॥ श्रीविद्याधनी देवीः सून
 ननखंदिता २ सकलः ॥ अद्विसिद्धिः दहिममाः ता ॥ ५

श्रीहनुमान् २२

नागकह ॥ तालघट्टकं काल ॥ ॥ श्रीहनुमान् नेनात्मा द
वि. तिरुवननाथ २ पंचजिनव्यापित. पंचवर्षदहा
॥ कु ॥ नमानि २ श्रीएतपूचकाग्रचेत् २ श्रीहनुकगुक्
ठवनि. वडाकागिनिठून्यता ॥ ॥ पूर्वदिगस्थित. हने
वनीलवर्ष २ दहिनपातुधनी. वामविंशधना ॥ कु ॥

प्रमादित ७३

घस्मनिगेनीचोनि. वनालिनिदवी २ गभवन्तिनि.
नावर्ष. कंकानसीवडा ॥ कु ॥ ॥ नागमधूमत ॥
तालशर्मान ॥ ॥ प्रमादितभ्रादिदठा. त्रिमिसुंदनीस
न. मन्मंजुलसन. स्थितलयना २ द्वादठातुज. चउ
वदनसुठमता. वडायानाहिनालिंगना ॥ कु ॥ कंकंक

दठमिगुवनः मानसचनसंवाधिया २॥ वंदना
लिंगसंश्रयसंहावः नाचयिदानः संवननाया २
कलिठार्घ्यंगः चर्मवित्तपितः कनति उमनृषि
ठालधना २ मार्कचूनस्तः कपालखट्वांगः पाठा
पनगुवुक्तः ठिनधना २ पीचडिनवनः मकुटजा

लंकृतः षट्मूद्राहनक्षरः पिता २ आलिकालिशयि
आलीटचापयिः व्याघ्रचर्मनिवसनः कृष्णतनूः ॥
ननठिनमालः आनंरुणीसंवनः दिव्यचक्रुनिनिक
नृहाहिया २ ॥ जनम २ मानुशुपयिठान (११) गभवं
तिपनमायः वडगोता ॥ कु ॥ नागललितः ताहारूपः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ मोहिने को द्युक्तिन वना ॥ ४० ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ ॥ दं दुव नाल लाल डि लाल ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॥ दुके ग नाल त स ल द हल ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ ॥ ॐ द व म हा का ल गिरु व न
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ ॥ स त गुरु व त स ॥ ४१ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

गमने ॥ १ ॥ ॥ लं न दिता ॥ ५ ॥ ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ ॥ प्र न न गुरु व त स ल द हल ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ ॥ ॐ द व म हा का ल गिरु व न
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ ॥ स त गुरु व त स ॥ ४१ ॥

कु
अ
२

मा॥ ५॥ प्रहृद्यै० उपायिन्नवदि॥ नविठिठिमैउले॥
नायार्मवयिभमा॥ ५॥ क॥ क॥ बालक॥ नर्येगत्रहा
म॥ वायूसैवधिन॥ विद्याठाहाग्य॥ ५॥ ॥ नागका
लमिचन॥ गाल॥ नाथ॥ ॥ कालमिन्नशिमाउवा
ना॥ मूर्निनकेकाला॥ घनकापिभिउवाना॥ क॥ न॥ क॥

यालीननागा॥ ५॥ मलमऊकूइन्वाऊमिमा॥ २॥ ठिठि
ननहिमवाऊमिमा॥ २॥ नहिबालूखीऊमिमा॥ २॥ मयना
लावसयामिमा॥ २॥ हलिकालिडलठमनिडल॥ २॥ इइन्वाऊमि
मा॥ २॥ वडसमकस्तुनिठीना॥ २॥ क॥ पूननावहायामिमा
॥ २॥ मालिया॥ ०॥ इनसानिडल॥ २॥ नहिबालूखीऊमिमा॥ २॥

या २ अथ ॥ कृगकनेत २ गुडा गुडन मुनिय विद्या २
नील हृदये गहव विद्या २ तहि जस वाव २ प्रहमा नि
या ॥ कु ॥ ॥ **आजमेधुमधि ॥ उकमाल ॥** ॥ कालिगवज्ञान
त श्रीचक्रसूत्र ॥ कृकाना हव ॥ कृकामवप्रमा ॥ २ मीसा
हृदि मयमी ॥ सेशना ॥ पंचसात्रिमयमी सह कृगु ॥ कु ॥

खरव. खादि २ नरगत कृदहन ॥ ध्यामिद्यात्र स जलिवलिना
२ श्रीवक्रयागिनिता किनिना मा ॥ खेउना हानूपिनि ॥ धेव
यांगेनि २ कृति सुवीत्र विप्रवृत्त ॥ मीउल ॥ कत्र न किलि
किला यमान २ उमान् धी लखनि ॥ प्रमादि तवाडिया
न ॥ दानयति विप्रविनासिता २ यागिनी धेव दवि ॥ धेवम

अतः पञ्चमः लवंगुं लु सुधार्तिपूष्टिमा २ मात्र विना सन
 नकुनकुसयना नृ शिमत सुखकल माकुरु वीरु २ स
 वसिहिवाक् ऊरुकागना कत्रा इति न वा र्म सीतवि
 तासु २ मत्रमा इति हल पासिममत्रा नृ नृ नृ नृ हल
 सख माकुरु प्रदाता ॥ ध्रु ॥ ॥ नृ गायत्री ॥ ता लता

उदित
 पुत्र
 २२

॥ उदितरवन कमला सन किनल २ ललितपना
 वन सुलभता २ निर्मल हृदय कनूत मयना ॥ २ दहि
 नृ नृ मवत्र प्रदाता ॥ ध्रु ॥ ॥ नृ नृ नृ विरुता इति नृ
 ॥ ॥ विरवन व्यापित ऊगल उच्छाप्रिया २ प्रथमा मिवृ
 गमला के वयना २ कनकत्रा नमति हात्र वि लपिता २ क

नकसुगुवगधुति२वासकमलधन वनदभोरुनक्षर
 सहजानेदमृति२सुत्रनत्रकुकिनत्रगधपुकिमा
 न॥ ललातचनक्ष॥ शिन्नगधधुतिमा२ किमित्रधानखल
 माकुप्रदाता२ दनसुनपाय॥ इः खहनन२ नकवधमृत्
 नरुसुलावना२ सर्वलकलसिधु॥ २ नलखविगकुगु॥

धात्रिलाकधन२ सार्वमिगुलखवविजया॥ धु ॥ ॐ ॥
 नागकलाज॥ गलधुकीकाल॥ ॥ अतिरीषध॥ उगु
 प्रवेडा वनुमुख नृसुगुज वनखलीटा२ नृन्यासिगध
 नलासुनक्ष॥ वज्रधैलधन नत्रशिन्नमाला॥ धु ॥
 नलासिधुगुलाक विजया२ विजयाधुमिगुला

गतिरोपस ५५

प्राप्त ब्रह्ममेतच्छ्रुत्वा लितप्रतिष्ठायादतलस्थि
 तडमासहेत्यत्र विष्णुमाधविष्णुवापिता ॥ **न** क
 पिलावन क्रोधस्वरावापतिरुतदगक्रोधविद्युसै
 हात्रा **२** खपुष्पकधनमात्रसहात्रावीनविक्रमप्र
 क्षितिकिनर ॥ **प** नरुवाधननावसदहासद

क्रोधवृद्धयादतमहा **२** दानवनागामानवदहा वि
 ब्रह्मगणसयत्रसलीना ॥ **का** यवाक्विह्वानधने
 ता किल्बिषदहानिर्मलधनीना **२** खरुमहानर
 गागभवैतैस्तत्तुत्रक्षत्रिभोगतधनिमा **॥** **कु** ॥
ना गधनाधी **॥** **ब्र** ह्माल ॥ **ग** द्धमृषप्रिनमनगी ॥

इति दत्तत्रयमन्त्रमेतच्छ्रुत्वा कोपीतिहृदयैरुह्यते ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ विष्णुदेव

न
 ५
 ५

इति दत्तत्रयमन्त्रमेतच्छ्रुत्वा

वसुन्वति नृपाधिपतिगः एवञ्च २ हनमसिमकुटा-न
नारुतसः तनसिकित्तसैकाठम ॥ कु ॥ नात्रियावि
पुनानियादर्यः नात्रिय इः खविदात्रसः २ नात्रियासा
यासासैवाराः नमममइः खनाजिगा ॥ पत्रगुवा
संकुणवइहृताः हिंदीपालदहिनकत्रा २ मृगालव

नखदीगधत्रिः कपालकलककुवास ॥ विविगुव
मृाचूटतिरसाः ऊपाइतमसिमैठिता २ लीवकत्रस
लेवादत्रलः रः पायलरिमिमिवाडीत ॥ नत्ताग
त्रधृतालत्तागलिताः मूखिकमुखभगिर्दनी ॥ दीना
दमाल्वमसखदाताः नमासु २ श्रीगः एवञ्च ॥ कु ॥ ॥

विष्णुसंग्रह ५१.

नाग ॥ गाल ॥ नृग ॥ इति नागः ॥ विष्णुसंग्रहः विष्णु-
विष्णो ॥ श्रीकान्तविद्यापि नृगः सृष्टिरुवा ॥ ५ ॥ नृगानि ॥ वीगी
॥ नृगः सृष्टः नृगः नृगः नृगः ॥ ॥ विलसति कूटगुप्तः नृगः
हृत् सृष्टः हृत् हृत् ॥ ॥ नीलपीताम्बरः सितवर्णः
॥ पर्वतः नृगः नृगः नृगः ॥ नृगः नृगः नृगः ॥ नृगः नृगः नृगः ॥

उद्दिष्टा ५२
विष्णुसंग्रह

नासि ॥ नृगः नृगः नृगः ॥ नृगः नृगः नृगः ॥ नृगः नृगः नृगः ॥
नृगः नृगः नृगः ॥ नृगः नृगः नृगः ॥ नृगः नृगः नृगः ॥
॥ नृगः नृगः नृगः ॥ नृगः नृगः नृगः ॥ नृगः नृगः नृगः ॥
नृगः नृगः नृगः ॥ नृगः नृगः नृगः ॥ नृगः नृगः नृगः ॥
॥ नृगः नृगः नृगः ॥ नृगः नृगः नृगः ॥ नृगः नृगः नृगः ॥

॥ प्राकृत इव गच्छेत् ॥ लावनीवर्हिनीद्वी ॥ पातुमीवृद्ध
 उकिंति ॥ ॥ लामयाग्राम ताहाने ॥ तमर्थे कृतमानवा
 दाडिमीबीडनदना ॥ दाडिमीपूष्यनाडि ॥ ॥ दिवाकृत
 निगमाथ ॥ वेष्मनला कलकल ॥ मेराकितीतीनत्रह ॥
 मंदानपूष्यमालिनी ॥ ॥ सुमनः सुमनावर्ग ॥ स्वर्दितीचि

समाग्रहा २ हृदि स्थिति विनाशनी २ विष्ठाग्रिगुह्यनूपि
नी ॥ ५ ॥ ॥ ज्ञानमालव ॥ मालमाथा ॥ ॥ कनकवध
दहा ॥ एकमुखद्विगुह्य २ सकूटकणी ॥ प्रिजितावनीद
यी ॥ ५ ॥ ॥ नमामिह्री ॥ बुद्धिनिदवी २ ज्ञाननम
हि ॥ नमद्वि ॥ नमद्वि ॥ सिद्धिद्वसाद ॥ ॥ सिंहलदीप

五

नृसि. ललितासनस्थिता २ नृत्तारवदहर्षिता. अतिर
 खल्लभस्थिता ॥ ॥ दहिनरुड इव. शत्रुघ्नानिदिदवी २
 वामरुडसर्वत्रल. रणकुनस्थिता ॥ ॥ नृसिर्मेउलमा
 ऊ. वक्रिस्थिता २ सगसर्मेउलमाऊ. प्रमादितरुदया
 ॥ ॥ श्रीमाहिनीदवी. तिरुवनया पिता २ सननत्रनि

प्रलयताठिता ॥ ॥ सगगुत्रवत्रल. वत्रप्रसाद २ त्विद
 वीवत्रल. अक्षिसिद्धिप्रसाद ॥ ॥ ॥ नागक ॥
 तालवर्ककाल ॥ ॥ नायमहामघ. गीधर्वनगत्र २
 आवत्रडेगम. पातात्राम ॥ ॥ ॥ हुनवनाग. सधत्र
 ॥ ॥ ॥ हकीवीपीपरुमि. कालनकालवर्ष ॥ ॥ कनडा

नयमहाभय २.०.०

त्रिविमिति उन्नतमहा मघ २ तृप्तगुल्मलता वृक्षः सख
 पालिता ॥ ॥ जलधननवमघः जलधनना मूख २ ऊगु
 उपकुगुः भीतिक त्रित ॥ ॥ श्रीहनुकवङ्कः गत्र ५ आ
 हाकन २ आगः कुत्रमहा मघः सर्वनागा ॥ कु ॥ ॥
 नागकनदि ॥ गुह्यताना ॥ ॥ घट्टागिति देवीः प्रिरवन

व्यापिता २ विघ्नमात्र इष्टः दर्पविनाशानि ॥ कु ॥ ननामि २
 दविः श्रीवङ्कवाजाहि २ जमिति हिदा मतिः ऊगन ५
 ननि ॥ ॥ पूर्वदलगतः त्रकवर्धगी २ ००ीठमनमा मिति दे
 वीः नीलवर्धगी ॥ वायव्य माहिनि देवीः सितवर्धगा २
 पठ्यम सेवा त्रिहीः शुभेन वर्धगा ॥ ॥ नेत्राथ सीगुसिली द

वी-हृत्तवर्धुला दहनवेडिकादवी-धूमवर्धुला ॥ व
 गुर्गुज-कानन-पीवमूडाएनहा २ स्वस्ववीडहैएव-न
 ननात्रिदिगीवना ॥ कु ॥ ॥ नागगंधात्रहैएव ॥ बोगाल ॥
 हचिहू-वृद्धमनाऊ-स्वनादिवर्ध-मालायागाऊ-शू
 कात्रजागी २ कूटाग्रम-सध्व-पिकात्रजागी-पध्व

श्रीकात्रजागी २ ॥ तइहव-श्रीमद-माघपाठा-
 मंहक-लाकठ्यत्रै २ सहस्र-पलाठा-सत्रसीत्रह-
 मध्व-चत्रहयुगी ॥ ॥ नृशुऊमकानन-मि
 त्रसिधुगासिताह ॥ तथामागी २ नृशुयवत्रद-श्र
 माघपाठा-ऊपमाला-सव्यध्वनही ॥ वासकत्र

रोगमनः सत्रसी नृहः त्रिदंशः पुरुषकधनस्य रसा
 हियः लाकठवने प्रहजामि दहिमः साकगति
 ॥ ॐ ॥ नमो कुरु ॥ गालस्य कंकाल ॥ ॥ अनिलन
 नलजलः अचलसुमनः ॥ गइपत्रिविधपद्मः ल
 झावीजजाग ॥ ॐ ॥ नोमिष्ठा मदाय्या वल्लकि

गठवने रजगातसीनकुलः विध्वनूपधनस्य ॥ ॥
 मित्रसिन्धुमित्राविविः लाहिगवर्षः ॥ सव्यसूक्तव
 नदीः वामसूक्तकमली ॥ ॐ ॥ वेदवदनः सहसुन
 यनः ॥ वगुर्वाङ्गुलिचनः वीदिगवर्षः ॥ ॐ ॥ स
 कुर्वचनः ससूक्तधनस्य ॥ अनमिष्टवदनः हर्षः प

विशदप्रशयपत्रि ॥ ४
गोविन्द

प्रपाहितीती ॥ ५ ॥ ॥ रागहेत्रवि ॥ तालरूप ॥
विषादप्रशयपत्रि ॥ सामयकवाल २ वित्राडितल
झावीज ॥ सीजातनार्थ २ दहादिगा ॥ दर्शित ॥ त
वदहज ॥ प्रशया २ सकूटविश्राणित ॥ अमितडि
नी ॥ ६ ॥ ॥ खेननामि ॥ घउकुत्री ॥ लोकव्यनदवेर

दानप्रतिभुरगति ॥ प्रापयति ॥ ॥ दकुकर ॥ आप
भाला ॥ वासधुत ॥ कमल २ अयत्रभुजव्यय ॥ छदि
अडलिधुत ॥ २ नानावाधि ॥ सत्वगत ॥ तवपाद
पूडित ॥ २ खवन ॥ हर्षवड ॥ गीतकत्र ॥ ७ ॥ ॥
आगअहनी ॥ तालरूप ॥ इडमान ॥ ॥ सहस्र ॥ पल

सहस्रपला

[illegible]

श्री नमो भगवते

श्री नमो भगवते वृद्ध मकूट विना किं २ चतुर्दश
कं जासल पी उत्र बदन ॥ कु ॥ नमो भगवते श्री न
ह्यकनाथ लोकोपी २ ऊगदी ध्यत्र ऊगगनाथ
गिरुवनमालिनी ॥ दहिन वत्र ध्रुव वाम ध्रुव
कमली २ नमो भगवते उत्र सिद्धतमसि ॥ ॥

नमो भगवते

ऊगगनाथ निधिमय ऊनसमूहत्रही २ विजया
दिह ध्रुवत रुनतिरुगी ॥ कु ॥ नमो भगवते
लनाथ ॥ अवकात वर्धनव वीकाई मरुकर ग
नरु रुक्ति वास समन बदन ॥ कु ॥ रुगवन् गवध
रुगामनस्य मृत वावमप्रतिदिन रुक् २ नमो भगवते

पिठयत्र. लाक ७५ त्रै २ ॥ पप्रविधूयकुवाल. सैनर्तुम
 नस्थितं ॥ ॥ दहिनकत्रदिवाकत्र. कित्रह संप्रकाशितं
 २ कामकत्रचंद्रापत्रि. मूकलितकडू ॥ ॥ गुत्रचत्रह
 मत्रह. इगतित्रह २ वायक. खवनहर्ष. सुखावती
 गमनः ॥ कु ॥ ॥ त्रामष्टमत्रमालथी ॥ तालरुष ॥ ॥

गुणवो ५ ११-

गुणवो ५ सीरुव. अंवदागवर्ष. अमितारु. त. अगत
 मोलि. धनही ॥ कु ॥ त्रामिष्टा. हनिहनिहनिवाहल. ला
 क ७५ त्रै २ पंपास. तार्कहनि. स्क. अमत्रि. स्थितं ॥ ॥ द
 कप्रकाश. वृद्धदर्शन. द्वितीय. अकमाला. तृतीय. इग
 तिस्थित. लाकसंदर्भितं ॥ ॥ गुत्रवादीराक. सनन. त्रिपु
 वामगुज. दंडधन. उहयगुज. लकाजिन. अवनगुज. कर्म. धनिगतार्थ ॥ ॥

मकुटविशाल

विषयनाथनी. सुवनहृदयेचक. किलिन्ननाथनी. कु.
मगपमज्जमि. गालप. मकुटविशालित. अमि त डि
नत्राडी. २ विरुज मज्जनन विहितमन. क. मानमि
पुलावक. वरीकनलाक. २ स. मीमि. विरुवन. ना. अ. म.
कासी. ॥ कादिनी. मीतीक. ॥ स. म. पा. वि. व. त. २. वान. व.

कु.
श्री.
म.
न.
व.
र.

वि. कुरि. न. क. त. म. ॥. का. म. वा. क. वि. म. ॥. सु. वी. सु. व. ॥. अ.
मि. २. दान. म. त. म. ता. वी. क. त. म. ॥. कु. ॥. ना. ग. ॥. ॥. ॥.
गाल. म. ॥. डी. का. न. स. र. व. त. क. व. ॥. का. क. न. द. म. म. ॥.
मि. २. मी. लि. सी. क. नि. म. ॥. अ. मि. त. न. वि. ॥. म. र. न. ध. लि. त.
न. ग. र. डी. ॥. कु. ॥. नो. डि. वी. त. क. लो. क. व. ॥. २. म. ग. वा. दि.

नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सिंहायक ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
सर्वधनं ॥ कु ॥ कनकमयनाभः कान्तद्वयदृष्ट्या ललकज
नप्रतिसेदवमि २ स्वस्यादी शङ्खमृगा लङ्का मि सुदा २
दहिमवीकि गगुरुदली ॥ कु ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
जन्म ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मी गवर्ध २ पिकरुदलाजगत्तावननूप नमि गत भग
त मोलिधत्री ॥ कु ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
कि नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
पूजयन्त लङ्काद्वयधनित समाधि नृका २ गद्वयनिसदि
मित पूर्य सुपातु दानपतः गुरुमाकुपातु ॥ ॥ लङ्का मि २

वो लोम

गोमाकप्रत्रवात्र व्यालमृगधत्रितपाठ्वमृगो २ ग
वचत्रधकसल मृगप्रवासं दहिमरुवगतिविगत
वासी ॥ कु ॥ ॥ ग्रागवनाति ॥ गालमाध ॥ वाधमि
गवकु धादठगुअ २ मूलनातनमवकवर्ध ॥ कु ॥
मोमिगोमायाजालकुमलाकठवत्र २ ॥ विमिलावने स्ति

सुवनदठिगी ॥ कु ॥ वामकत्रधुत गडलीपागु २ कीकन
दमसि वकुधन्धे ॥ कु ॥ दहिनपीचठाख उमत्रुवधो
ग २ अंकुठपाठावड विठारवधत्रही ॥ कु ॥ माफेउव
कुवाल प्रयालीरुपादे २ मधुडा रुत्रध मीउमालर
मिती ॥ कु ॥ लसदसवीकुलो मीयाजाल केदिनी २ माकु

५५
५५
५५
५५

मार्गदिहि पुनर्जन्ममाचनी ॥ कु ॥ ॐ ॥ प्रागगीक्षात्रने
नावेनालकमि ॥ ॐ श्रीकृष्णाय नमः ॥ प्रित्तत्त्वभूत प्रियानिब
प्रिरवठा मुविधरूप २ मीमित्र लालक प्रिदः खभाव
क प्रिरवननायक लोकठाए ॥ कु ॥ पूजकमि ॥
लाकं गधनरुगलान् नकुमु नकुमु नकुमु नकुमु नकुमु - दि

महामादि पूजात्रये कायवाक्यचिह्न कुचक्रमि ॥
मित्रधर्ममित्रारु मधुगतमिदि विधन्ति प्राति
रिधिविधिवर केकलीर कनकमृनिकाधप साक
मृनादि वृद्धगक्षन् ॥ श्रीश्रीमात्रादि रवरीतात्रा
वाधिसरसा मागुगक्षन् २ पुलाकविदमदि हयगी

वमूख. श्री गेज वादि कुायग सन् ॥ मे प्रमना धमि
भाका ठा गीज. सर्व ता रुड कुलि ठा पा सि २ श्री मे रु धाय
सर्व विष्ठी रि. सुगर्ह खगर्ह. वापि हला न् ॥ ॐ इह
ती ग जाठी कु वन. वी के ने सन्. म नू की भज २ वं इ सु
॥ ॐ क ठा ना वन पाल. सुगर्ह विष्ठी ॥ ॐ ॥

॥ २ ॥ सुपसमा कृ त क र्ध विष्ठी ली. नात्र द गु वृ न्ता लि
त गाली ॥ पत्र मत्र सा नृ त वि क ल हा न्नी. नो नि सदा
ग हा ना म क र्ध वी ॥ ३ ॥ पा ठा क ली कु ठा नी न ड ह रु.
का म ल ती व न र्नी उ ल क र्ध ॥ नै दि क ग्रा ह म म न ड रु.
वा वी. नो नि सदा क र्ध वी ॥ ४ ॥ ॥ ॥

गहं गि सहाय. विकटमुखाकृततरुमनिकायै॥ मूरु
कनाजकृतासन्नत्राव. नोमिसहागहानायकदेवं॥
॥ ५ ॥ नागमनाहत्रकंधग्रहांत्रे. लेवगुत्रुदत्रहात्र
मूहात्रे॥ ॥ ४ ॥ शुभनात्रथसैमताकधर्ष. नोमिसहागहा
नायकदेवी॥ ॥ ७ ॥ नासुहात्रीत्रसमायगतकधर्ष. छद्रप

दवात्रहावीचलकधर्ष॥ नुकसितायतदंतसुहावी. नोमि
सहागहानायकदेवी॥ ॥ १ ॥ तल्लविरुषहालुषितागभर्ष.
लुककात्रहालालसुपागु॥ घाघत्रनादविनादिताद
वे. नोमिसहागहानायकदेवी॥ ॥ २ ॥ बालसत्रस्वनिर्पिठि
तलायै. ददवितायकहागुवितायै॥ यवपठंति सदा

ॐ रुद्रविष्णु गणेशदेव तु महादयविद्याः ॥ २ ॥ ॐ सिद्धी
 गणेशाय नमः कृष्णाय नमः ॥ ॐ ॥ हरेर्वीरमर्षिदेव
 कार्मसिद्धिविनायक ॥ सो रागपत्रपरीतः दहिमस्तु
 खसंपद ॥ गणेशनीगणेशपतिवेव गऊवकुप्रिलावने
 ॥ सर्वविघ्नहरे देव गणेशपतिनमाम्यहं ॥ ॐ ॥

ॐ गणेशाय नमः

गणेशाय नमः ॥ गणेशाय नमः ॥ यागवतः पदपीकडाठानदी
 हानिठपत्रीनोमिठीरावदीयचनदी ॥ ॐ ॥ नाथदूनाथदूना
 थस्त्रीनाथदूनाथदहिमनाथः नृकुयपदी ॥ ॐ ॥ वडाठाकि
 त्यादिगणेशपतिवतदी २ हीगसितमात्रगणेशः रावठाजदी ॥ ॥
 दूनी कृतातिडा नात्रुमनदी यागवतमस्तु महारुय

हनर्दी ॥ धर्मार्थमनात्रय. कवलरुत्रदी. इ४ वात्र. हीसात्र. ग
 लेति धितत्रदी ॥ साकात्र नित्रकात्र. विठधतित्रैकत्र. पृथ्वी
 गगर्दी. डलमग्निप्ररीडने ॥ आमानलनल्वर्ध. माधव
 कूहो. पूडिती तवचत्रदी. सुरमगुस्थवित्रे ॥ सागुत्रचत्रदी.
 मिश्राधत्र. सुधानीद. रुधतिठ्रीयां गीवत्र. वत्रवर्धनी ॥ कु

अत्र
 २५

नमो कनशि ॥ इ४ वात्र ॥ अतिधात्रवदन. अतितीग
 न्रत्रात्र. हाउत्रात्र. विरुषितादहा ॥ कु ॥ तनीग.
 तनीग. नमो मित्र. वीरु. नमो काला ॥ ॥ ५ ॥
 दहितकत्रतिख. पु. वामप्रिठूला. खः पत्रमीउमाल
 व्याधुचर्मरुषिता ॥ कु ॥ सकलमात्रवल. दप्यतिहीता

ॐ
नमो
ब्रह्मणे
सर्वभूतेषु

सूत्रतनवीदिताः सवस्तुहस्तम् ॥ अक्षिसिद्धिवन्दाय
कन्दवागिरवतवीनाः श्रीमहाकालकान्तम् ॥ कु ॥ ११ ॥
नागहस्तम् ॥ ॥ ॥ ॥ अक्षिसिद्धिगुरुसुतासिद्धि
उयविद्यनक्षत्रगिरवतव्यापिता ॥ कु ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ नागकुरु ॥ ॥ ॥ ॥ दिमूर्खग्रिनय

विमल
वदनागि

नः नरु सवर्धन नगनमकूटकं ठाप्रहृलितकिन्न
रम् ॥ कु ॥ ॥ नमो देवि वन्द्यानाहि गुणपामिना न
रम् ॥ ॥ मणिगहविलसिताः कूटलकत्रहा ॥ हा ॥
आरुत्रहाः ॥ ॥ शिगरवर्द्धिग ॥ कु ॥ ॥ सव्यशुद्धकत्रगिः
वामधृगपायु ॥ नाडितनत्रात्रमालतीविता ॥ कु ॥

शिवसुतनि ८९
५१५५५

तत्र हिमं तुलना ऊः ती उ व मू न्ति र सुननत्र वेदि
तः त व प द क म ली ॥ कु ॥ स ग गु न् व न ह मि प्रा ग त
ध्रिया २ रु न ति न् वि न व क रु व रु य शी ता ॥ कु ॥
ना म ह ग म न ल ली ॥ ताल रु प ॥ ॥ कि न ऊ न ति रु ग न्म
त लि क ह र ग व ति रु ग व न्म ह लि क ह ॥ त व प द क म

० ५ ०

ली न ना मि नि त्पि द षा ष म स न क षि ऊ गु य ल ॥ य न
ल व स ड की ड सी ग ता या प्र ति यु ग म व नि सी न
कि ता या ॥ स न स ह दि वि ना ष प क ड रा हं स ह द
य ह द य प्र मा द दा हं ॥ ॥ अ घ टि त घ ट ना ति
ध न की रं प्र ष मि त क ड मू न ना दि का ल ॥

संस्कृत
प्राग्भवन

उयमनिस्त्रियं पुसादनीयं प्रतिदिनम
हमानना सिवाल ॥ ५० ॥ नाग ॥ ताल ॥ ॥ स्वर्ण गिवि
ऊचंतसनीं ॥ २ हानं वयं सहविलं सं ॥ ५१ ॥ यं जामि २ यं गं व
चनं वचनं कमलं ॥ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ काननं दिव्यमिलोयनं २ विष्णुपवि
०१ कनकयधनं ॥ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ कनकमकुटं पंचजिनं त्रिजिह्वं २ विरक्तिरू

अ
श
॥
॥

विं ॥ ५६ ॥ वलवयनं ॥ ॥ ५७ ॥ विष्णुचक्रं कनकं ॥ ५८ ॥ सवित्रं २ प्रहमा
मिसदा ॥ ५९ ॥ वपदपदं ॥ ॥ ६० ॥ नागत्रयं त्रिलोचनं ॥ ६१ ॥ शिववर्धनं २ माधवक
५२ ॥ ५३ ॥ मिरुगुवं ॥ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ यं गं वचनं यं कनकं ॥ ५६ ॥ सगंधं २ विजिह्वं २
संदनं नंदं ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
कीकाल ॥ ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ ११४ ॥ ११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥ १५२ ॥ १५३ ॥ १५४ ॥ १५५ ॥ १५६ ॥ १५७ ॥ १५८ ॥ १५९ ॥ १६० ॥ १६१ ॥ १६२ ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ १६५ ॥ १६६ ॥ १६७ ॥ १६८ ॥ १६९ ॥ १७० ॥ १७१ ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ १७४ ॥ १७५ ॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥ १८१ ॥ १८२ ॥ १८३ ॥ १८४ ॥ १८५ ॥ १८६ ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ १८९ ॥ १९० ॥ १९१ ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ १९४ ॥ १९५ ॥ १९६ ॥ १९७ ॥ १९८ ॥ १९९ ॥ २०० ॥

नागसमृद्धान् पृथ्वीर्धनाङ्कु ॥ कु ॥ हन्ति वाहनलो
 कं ध्वजाश्च प्रथमा मितवप्रादः सत्रसिद्धयुगलं ॥ ॥
 मकुटविनाङ्कुः नमिता रुजिननाङ्कुश्चंद्रवदनः मृ
 तुकुञ्जध्वजः ॥ ॥ दंताजिनकनकान् वामकनध्वज
 शीश्च मृगपतिखगपतिः यश्च पतिवाहनं ॥ विधृतम

ध
 म
 न
 र
 ७२

रुक् सतगुञ्जध्वजश्च नतिभ्रमृतवज्रलोकां क
 नगीतं ॥ कु ॥ ॥ नागकुरु ॥ तालपट्टकाल ॥ ॥ स्वस
 नदहनतायः रुमिसुमनश्च सत्रसिद्धीका नाहव
 चंद्रवीणा ॥ कु ॥ नटतिसमा ठिलेष्टीका नवजा
 ॥ ॥ चंद्रवदनः दहननयनाश्च निविज्जलदव

ॐ कूँ उलक ॥ कु ॥ कलदसिया ॥ विलसित हसर
विदलित विभुवन निर्मल कल ॥ कु ॥ तत्र निर्मल
ल विनिहित ज्ञान गलित सकल मात्र प्राकल
ज्ञान ॥ कु ॥ ठाठा धना कीर्त दक्षय दक्षीत ॥ विष्णु वि
नायक ॥ हृतय कुर्जात ॥ कु ॥ नाम प्रदक मल ॥ हृद

ॐ नवदत्त ॥ हृदित नाम सुतना वसगीत ॥ कु ॥ ॥ नाग
गर्व उगिति ॥ तालमाध ॥ ॥ द्विविप्र सनावन विला
ठा यिक ठम ॥ उथरनागा ॥ मंजुलला इगमत्र ॥ इगत
निवासियात्र ॥ ॥ नमिय नमिय ॥ निर्नतत्र द ॥ ठा ॥
सहस्र हृद निनेया ॥ जिन्न हात्र प्रवि ॥ ॥ नाच यि

न. जगत्तनिवासियात्र. नुचउयागिनि. मत्रिप्र. वडवा
नाहिनालिगधम २ कालचित्रनाचयित्र. जगत्तनि
वासियात्र. उथरुनागा. कन्धकन्धमत्र ॥ जय
नालिगन. निनावर्षवात्रिप्र. नाचयित्र. जगत्तनि
वासियात्र. उथरुनाला. श्रीसर्वनाशमत्र. जग

तनिवासियात्र ॥ कु ॥ ॥ नागरेनवमालणी ॥ तालइ
जमान ॥ ॥ धूमिगमत्रिचउकनाली २ हीमधिगत
कठम. विनयन ॥ कु ॥ ॥ जयिया ॥ ॥ रुकुध. सहग
धइवि २ नुकनानामात्रवे. महावलिपूजात्र ॥ कु ॥
हुंहुंहुंहुं चउमानदिनागिता २ हुंहुंहुंहुंहुं वि

सु
मु
मु
मु
मु

युनिवात्रक्ष ॥ कु ॥ समवात्रकुं तु जा गीवनीदवी २ व
 गुनिवर्तुलिं चउमववयन ॥ कु ॥ सितकैकात्रन
 प. कुग्रावलिलेभरं २ मोदिकनैक. समाकूललेभ
 रं ॥ कु ॥ नूद्रमहावलि. पितृवनलगहं २ मद्यमत्
 समीस. नूधिननाहात्र ॥ कु ॥ ॥ नागगीधनहेन

वि॥ तालचोता ॥

हनगितमकुटकिनटिमसिहा
 सित. चनक्षगम २ साहियवशसत्त्व. पत्रमव्वनप
 इमपदी ॥ ॥ गमठसुनिवह. पिथिकैलेभगतदहधन
 ॥ ॥ चात्रिगुहलनचात्रिगुकागत. पद्यशगम २ सा
 हियवशसत्त्वपत्रमव्वनपइमपदी ॥ ॥ गिरुवन

कलितमन्त्रति. श्रुन्नायन. सत्त्ववति२ नाचयिवइस
 त्व. पत्रमठ्यनलीनवति॥ ॥ नस्मिहसुकिन६.
 वाउठासूर्य. साहास्यवति२ वरुविधनूप. विठमल.
 श्रुन्नायन. तत्त्ववती॥ कु ॥ ॥ नागनामकत्रि॥ ता
 लमाथ॥ ॥ श्रीमलपत्रा पत्रि. सीस्थितदृष्टासन.

दिशनाजसमवर्षिहधनी॥ प्रकवदन. कुवल्यकु
 दायत. नगुप्र. काठिती॥ कु ॥ नमामिठी. श्रुनपच
 नमेश्वी. सकलहानुप्रद. गिरवगुनी॥ मकुटवि
 यातिन. पंचजिनवनी. सकललाककृष्ण. कर्मकनी
 ॥ ॥ प्रथमदकुपुत्र. क्षत्रिगखकुन. श्रुहानलील

निजागिनी ॥ दहिनवामपादकीचित्तवध २ कनधनि
 कर्किनकुदनि कुठाजागिनी ॥ ॥ वामकनस्थित.
 स्वठिनमूत्रति २ ग्रीवदिनिदिनित्रधिनवयि ४ जा
 गिनी ॥ ॥ हनयिनपत्रमाद्यवङ्गीतकृत २ प्रथमा
 मिथीदविचिन्नमस्तकजागिनी ॥ ॥ नागवनानि

मूषवाणैमत्रमालणी ॥ तालमाथ ॥ ॥ धन्यनेनेकन
 कागितकाम. नमितनविव न. जिननाहसैरुव ॥ ५ ॥
 प्रथमामि. गुलाब्ज. वर्णकन. लाकठ २ जीगुलीताना
 दवी. नमसीह ॥ ५ ॥ ॥ लाकसैदठिन. समाधिध
 नयन्. विविहनिर्णकनादि. सूत्रसैयसैसृष्ट ॥ ५ ॥

ॐ
 नमो
 कवर्धकन. शिवमास

२४७ कलपन दिनयने संहृष्टा २ त्रितवनस्थितस्तकात् स्ववर्णस्थपित ॥ ५ ॥

स्वर्ग मर्त्य नाग लोकसंस्थित सकलसत्वाद्भर्तु कम
लासनस्य ॥ ५ ॥ वशीकृतापाण कासात्रसंधुर्गु
विमाससूक्तसत्त्वान् दिनलाकप्रषित ॥ ५ ॥
नागनिगद्य ॥ तालनीतमाध ॥ ॥ श्रीमान्नायाविला
कितं ध्यननंदन समरुवदवी कीवीजात्मां २ वृंदसू
३४ हस्तग्रहद्वारेः संप्रतहायन २ शुक्लवधर्मनाक पूजितलाकणी ॥ ५ ॥

कुहमंसे काठाठातीनां अनुपमसंकल विद्याप्रदा २ वा
मकनद्वय वीशमपुस्तक दहिनद्वयसंखनीमालाध
नां २ वृक्षविष्णुर्गकने सुसवितीं श्रीं श्रीं श्रीं सनस्व
तीदंवी स्वीनमामि २ ॥ चंद्रमं तुल मां २ उदयनी हंस
नधसंस्थिनी २ कनूतद्वयां जननिम स्वयांतवच

नमो कंठामृतदहि ॥ अस्मिन्सुस्मिन् कूत्रमहंदं वी
 जननिमीभवं नवत्वया ॥ ॐ त्रं धं गत महासुख
 प्रदायिनिबुद्धिदायिनी दविनी मिगु र्यै नवमहाक
 न्धम गिरुवनकुलयिद्या एकान्ती एवमुहायिद्या
 ॐ या प्रीत विद्यानां निरूपमहानंदहिम ॥ प्रथमा मि

सात्रदस्त्री एवयामि ॥ कु ॥ ॥ नागपद्मं उत्रि ॥ तालमा
 थ ॥ ॥ अत्र शवदन त्रीदी वालकोमानिदवी नका
 गिनयन मयूनासनी ॥ कु ॥ प्रथमा मिदवी विष्वक्वा
 यिनी ॥ ॥ चतुर्दश विंश सिद्धिप्राप्तनी ॥ अथ ननु
 उठाकि कर्त्तुं नी ॥ ॥ नकवस्तुना एतसुख

वातकृपा
 २२

शिता२ प्रितिहवनव्यापिता॥ सर्वः स्वद्वित्रितविता
 ठिता२ यनरुक्तिसख भननकपूत्रिता॥ कु ॥
 नागभनकनी॥ तालमाध॥ विदलकमलवने॥ कु
 समगयने२ मधुकन॥ ह॥ नृव॥ लीना२ श्रीविनपाड
 खगमुखदवी॥ म॥ धनपालव्यापिता॥ कु ॥ नमाति

नेत्रास्मादवी॥ प्रिनुवनव्यापिता॥ वकुलादवीश्री॥ मृग
 ह्यत्रि२ सयत्रसूत्रासूत्र॥ वीदितचत्र॥ भनगन्नद्विषि
 द्वि॥ वत्रप्रदाता२ नैदनमिव॥ वीदनतत्रो॥ भनगकुसुम
 पात्रि॥ ज्ञातवन॥ ॥ नित्यगीमसम॥ वागमतितीर्थ॥ भ
 नगतीर्थसमागता॥ ॥ नृहरेत्रव॥ नृहयागिनीद

श्री
म
२५

वी. नृनगदकासूत्रकुण्डाला २ नृनमहालय. इति
निवात्रिणी. नृनगविघ्ननिवात्रिणी ॥ विघ्नव्याधि
धी. तात्रिणीदवी. नृनवनिर्जनकातिमयं २ नृनिमनस
खलुलदायनीमनी. जनमनुष्यायठानशगति ॥ ५ ॥
नागमालव ॥ तालनाथ ॥ ॥ नकवर्धनक. मुखदि

रुद्र २ विष्णुवदहिन रुद्र. महासेनवमूत्रति ॥ ५ ॥ न
मानित्रीलीमसन. पत्रमयन २ ॥ वामरुद्रपागुन.
वृषासनमर्दनि ॥ ॥ इतिविलाक. सूत्रसूदत्रि २ रु
द्रवर्धन. इयकात्रिसहिता ॥ ॥ नृर्धलापूरु. ना
यसूत्रगता २ रुद्राहरीयान. प्रसादसिद्धि ॥ ॥ रुद्राहरी

गोवीर्यः नृपिहस्तदहिम २ हस्तगुन्चनः वनप्रसा
 दसिद्धिः ॥ रावगुहावनः पुष्टादसिद्धिः २ वनमाल्य
 गिनिस्थितः वज्राचार्यः नयितः २ भूमनप्रवदवः श्री
 नाशाहीता ॥ कु ॥ ॥ नागकुरु ॥ मालवटकीकाल ॥ ॥
 दठावलनिग्राधनः बालचंद्रोद्यनः २ वर्तुल गिनयनः

धाननकवदनः ॥ कु ॥ ॥ जयजय श्रीरघुप्रीवमहादेव
 व ॥ ॥ रुधिमसिहृदतः नागनाडकुंडलः २ कनतिक
 पालकनः धृतनर्मउमाला ॥ कु ॥ ॥ कर्वधपूत्रितघनः
 नृतिनीलविग्रहः २ कसलपाशिनासनः ॥ धा ॥ त्रितमान
 शासनः ॥ कु ॥ ॥ हनरुगगदीनाथः समभ्रहितरवीशर

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

नमिसे नवगीत. महाबुद्धदेव. ॐ ॥ नागकनदि.
षट्कीकात्र ॥ ॥ नीलवर्ध. वा नृसिदवी. चक्रीकृतल
की० १ नृचकमखल. रुचितनृपधमत्रिता ॥ ॐ
स्व. समानसि. एकिसिपुत्रिता २ स्व. स्व. वीजाऊन.
समूहनादविमामकी ॥ ॐ ॥ नमामि २ दविठ्ठीनाम

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

कि २ नवजोबनीदवी. गिनगुहूनसुदनी ॥ ॐ पंचक
रु. भूमनमाप्र २ सुनासुननने. वीदितचन. ॥ ॐ ॥
नागवसि ॥ गुंरुत्रितालरुप ॥ ॥ वीतवर्ध. मामकि
दवि. विठ्ठीनापिता २ भूमनमानन. वा नृसिदवी ॥
॥ ॐ ॥ नवजोबन. गुंलोक्कसुनसुदनी २ स्वस्ववीजा

कुन. समस्तना ॥ चक्रिकुडलकंठि. गोचकमल
 ला २ लकुधसंयुत. गगनरुपिता ॥ नमामिवात्र
 धीदवी. सुत्रव्यती ॥ १ पूज्यामिम. मनावीकिता ॥
 सत्पुत्रचत्र. प्रथमा मिरकाया ॥ २ ननरुनसि
 द्वि. माकुप्रदी ॥ ३ ॥ नागकरु ॥ बद्धकान ॥ ॥ ह

॥ ३ ॥

न
 त
 व
 र्
 श
 ॥

नितवर्षगी. प्रिनयनसंदरी २ नवशोबन. नावशर
 हा ॥ ३ ॥ गुच्छदविमामकि वात्रुसिदवी २ ॥ नृष्टाद
 ठायुजा. हलनीकुकित्र. १ २ पंचवृद्धस्वतृणा. गुच्छ
 यागिनीव्यती ॥ ३ ॥ हकानेशहनिनवर्ष. हाकान
 गीधनाठान २ श्री. कात्रवीजहीता. नृमृताकात्री ॥ ३ ॥

सतगुरुचरः। ति न गत ध निया २ ए न यि सि द्वि व क्क
वडाचा म्यगीती ॥ ध्रु ॥ ॥ नागध र्म डालि ॥ ताल माध ॥ ॥
पंचमहाबाहु संमया चा त्रि सु व स्थान २ दठ। सिा र्म व म
शा ना धि या त्र ॥ ध्रु ॥ वी न वी न ध्य न व वि स्थान मी उ
ल मा ह नि वि ष्य रु त्रिया २ ३ ई का ना व त्रि दान

दधि. दानपत्रिया विष्णुनिवात्रय ॥ म. ६७ श्रीसेवत.
मायकालचक्र. हवडाकाय. विष्णु छलिया १ जाग.
जागितिमत्रिया. विष्णुजननि. समयान्नानंद. सम.
यिहायि ॥ सिंहनादवाडियात्र. उमत्रप्रसाद. ३९.
सूजागितिदानपू. १ जालीधत्रिपूत्र. अवधुवनयि

या. कर्षुपा. चतुशतनैतिहायि ॥ ५३ ॥ नमोऽर्चयामास
मालिनी ॥ तालमाध ॥ ॥ उद्योतचक्रवर्तिना ॥ ॥ धर्म
धनुचक्रवालात्प्रकाशीरुतं प्रिरुवतं चक्रवाललोका
पत्रिडांकात्री ॥ ५४ ॥ नमामि. श्रीमान्. उद्योत. चक्रव
र्ति ॥ चक्रवर्त्य. उद्योतिग. सै. स्थितं ॥ ॥ धर्मनाडव ॥ स

न. स्थितकनसंगी ॥ तथगतकनसुन. दधदूनीकन
 वी ॥ ॥ इगत. नाथ. इगत. मापिता ॥ इगत. मालन. का
 मप्रचालिनी ॥ ॥ इगतदः खसर्व. समहर्षी ॥ ललिता
 कुपध. सस्थितांरुत्रीकु ॥ ॥ दकुठायमूलन. धर्मच
 कुप्रवर्तनी ॥ वामठाय. मूलन. धनशक्तिता ॥ ॥ ना

गद्यम. माहमायावैधिगुपाठा. ॥ मात्रगद्य. सैत्रासन.
 कलद्रुतकपाशं. ॥ उगद्रुतकामन. भूकमालाधन
 ही. विंशतिविंशत. सत्काय. लीली. ॥ रं दर्शनमनसा.
 मात्रधनसात्री. ॥ भूषवर्ग. उगद्रुत. सैत्रासन. हता. ॥
 वशीकृता. वाकना. कृतभाकवर्ष. ॥ वेत्रगद्यद्रुतक

पक्ष. वक्ष्यं वादिनी. ॥ बुद्धविष्णुद्रुतः सवितचत्र
 ही. सत्गुत्रचत्रही. वक्षका. युगली. ॥ भूचन.
 पत्रणीमात्रवक्षधनप्रसादात्. ॥ भूकामिसकलान्.
 सैत्रलदवान्. ॥ ॥ नागवत्रात्रि. ॥ तालमाध. ॥
 प्रकमुखप्रितनन. पत्रमखिदवी २ कीचन. ॥

नमो भगवते
 नमो भगवते

न. ह्रीं स्वाहनी ॥ ॐ ॥ प्रथमा मिदवी ग्रीवकायधी ॥
 ॥ वामदहिनकत्र ध्वत्रिकपालविंश ॥ ॥ नृपत्र
 कत्रध्वत्रिकसूत्रकर्मउल्ल ॥ सर्वग्रसुखहल्ल ॥ य
 यत्रिदवी ॥ ॐ ॥ उगतः खदर्पनाठानि ॥ यनस्मन
 ॥ ॥ श्रीलाघपूत्रिता ॥ ॐ ॥ ॥ रागनाटक ॥ ताल

इर्जमान ॥ ॐ ॥ ध्वत्रिद्वि. सुखवाहनी ॥ धवलवद
 ना. गिनयना ॥ ॐ ॥ नमामि ॥ ग्रीउगतऊनतात्रशी
 ॥ ॥ सर्वव्यापिनि. चै. इ. ठा. मत्री ॥ मूलरुजद्वय. विं.
 इषाग्रधत्रा ॥ ॐ ॥ तत्रदहिनगुर्ज. नृकुसुप्रवत्र ॥
 वामनृपत्र. कर्मउल्ल. गिठूला ॥ ॥ उगतऊननीउग

ॐ ॥ ध्वत्रिद्वि
 माहेश्वरी

मध्य
वर्ग
२०३

दीव्यत्री१ मुक्तिमुक्ति हलदायनिदवी॥ कु॥ ॥ ना
गक॥ तालमठकीकाल॥ ॥ मद्यवेधनल मिनि
तवदन१ दुर्गपिंगलक० गीकालिकादवी॥ कु॥
जंगतमाकुकात्री० गीचामुंजादवी॥ ॥ सूर्यसमव
दना० विष्कपालधन१ नृपनरुजद्वय० खड्ग

दकधन॥ कु॥ कालचैतुहेत्रव० नालीगनगमठ१ म
हाभागविठुद्रि० महामायाकाली॥ कु॥ नरुमकुट
भिनसि० मुद्रारुनध१ नरचर्मवहिरु० कौकालन
यिनी॥ कु॥ प्रतासुत्र० त्रिपूगधसर्व१ चापयिचन
१० पुष्पालीटपदी॥ कु॥ ॥ नागकनदि॥ तालनृक॥

नमो वरुणाय विष्णवे कामाय नमो नमो मरुतकामाय
 विनिलचरि ॥ नमो मिथु विद्यायनी विद्वद्वाम
 लयव्यापिता ॥ अग्निमिद्विदायनी रुगतजननी ॥
 दहिनकादिनी वामयाग्रधनी ॥ विचित्रपुष्प
 माला कनकधनी ॥ एतन्मउलमाय प्राहल

नमो विष्णवे नानालीकृत पुत्रप्रवर्णिनी ॥ एत
 यित्रत्नवजन वरुणीता ॥ श्रीवक्रदवि चरत
 मानूणाग्रध ॥ कु ॥ नमो वरुणि ॥ तालमा
 य ॥ दिनमहिर्भुक्ति वरुणातलाद ॥ विनिनायन दि
 गीवता ॥ कु ॥ नमो मिथु विद्यावर्णिनी ॥ नमो ग

नमोऽसिद्धि वनप्रसाद ॥ कु ॥ दहिनरिद्र-नामभुक्ति
पात्र २ विचित्रपुष्पमाल-हस्ताङ्गति ॥ कु ॥ पुष्पकान्ति
नाव-उग्रकीर्ति २ तुङ्गद्विजगत्-जननि ॥ कु ॥ श्रीव
रुद्राकिनिङ्गागिनि-मन्दितानिद्रदित २ गम्भीरतिस्वन
नवज-मंगलगिता ॥ कु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

नागनाटक ॥ गालदुर्जमान ॥ ॥ प्रथमामिगुहाधिपनि
मंथलमध्य २ आनिनसकूटगम्भीरीविद्याधवि ॥ कु ॥
प्रथमामिसूदनीगीविद्याधनी ॥ ॥ नृकमूरवनकवर्ध
निनगुदितज २ दहिनकलिङ्गाधनीवामपात्रधानी ॥ कु ॥
सुखिस्थितिनानधी-मंथमालाख्यधी २ मकूटकधी.